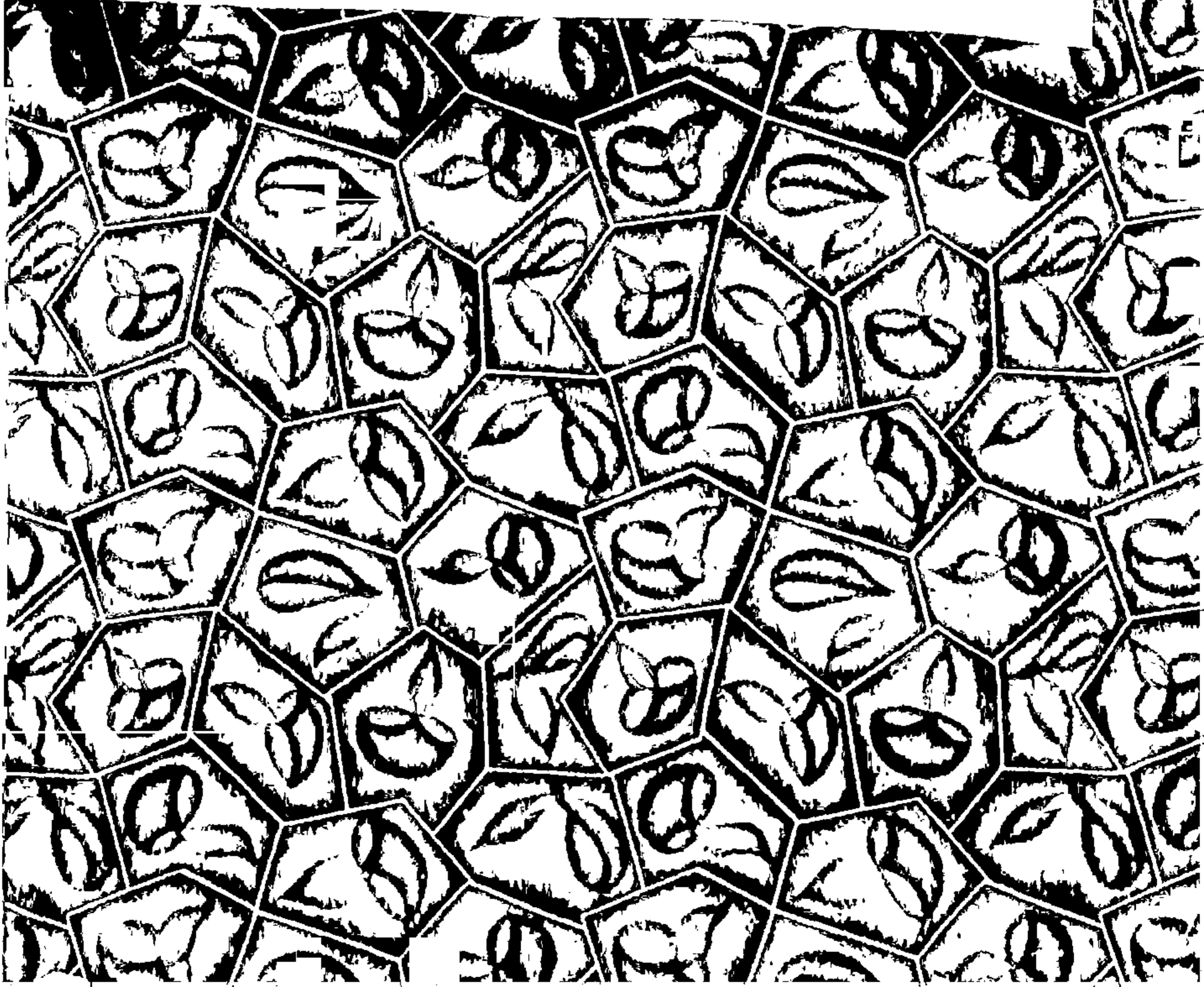


४

ବ୍ୟାଲେ

କଟ

କଟିଲି



म. ग्रं. सं. ठाणे

विषय आद्यातम

सं. नं. २२९

१८७९

२४ जून १८७९

आत्मज्ञान व वेदांतवर सुरस व सुवोध पदे, अपंग,
होऱ्या व गड्डल यांचा समावेश केला आहे.

यात

स्वरूपता

हे पुस्तक

बाळो बा नर सूजी यीणी
लोक हितार्थ तयार केले.

भाग पहिला.

मुंबई.

गणपत लक्णाजीचे छापखान्याचे मालक, आत्माराम
कान्होबा यांनी छापून प्रसिद्ध केले.

सन १८७९.

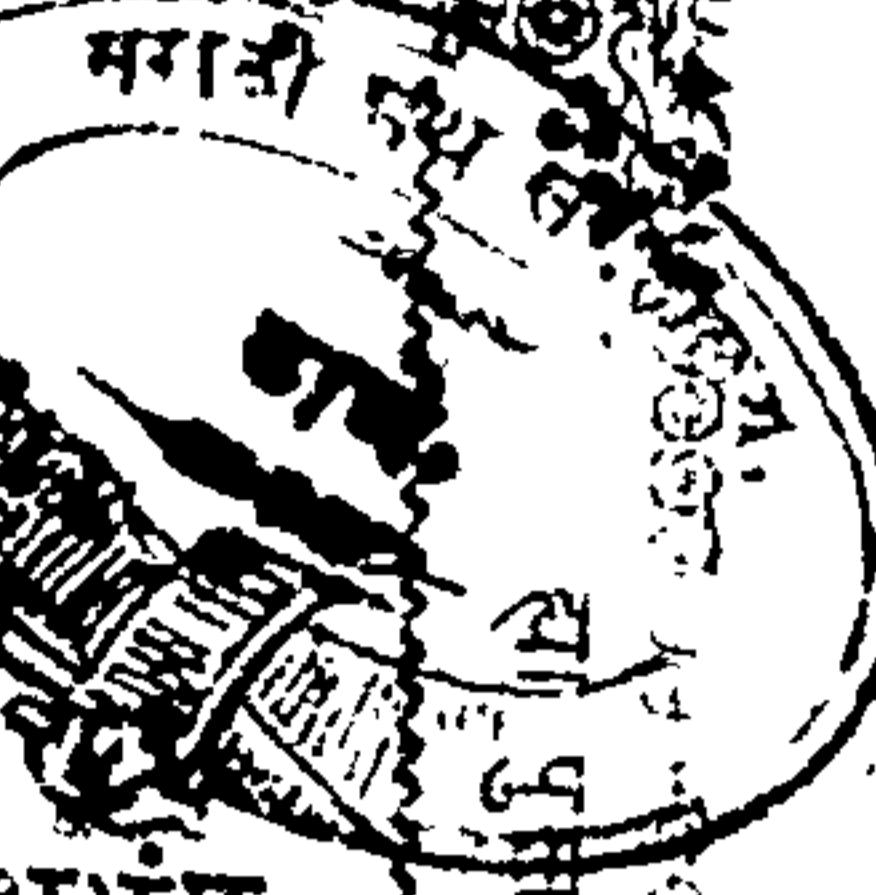
किंमत आठ आणे.

या पुस्तकाची मालकी सन १८७९ द्या २५ रुपया आकटप्रमाणे नोंदिली असे.

२५

व्या आकटप्रमाणे नोंदिली असे.

मराठी



व्या आकटप्रमाणे नोंदिली असे.

वेदांतपर कविता संग्रह.

यांत

आत्मज्ञान व वेदांतपर सुरस व सुबोध पदे, अभंग, होळक, व
गजल यांचा समविशा केला आहे.



— हे पुस्तक —

बाळो बा नरसूजी यांची उत्त्यापनी
लोक हितार्थ तयार केले.

भाग पहिला.

अंबईत.

गणपत कृष्णाजीचे छापखान्याचे मालक, आत्माराम कान्होबा
यांची छापून प्रसिद्ध केले.

सन १८७९.

किंमत आठ आणे.



हा पुस्तकाची मालकी
सन १८६७ च्या २५ व्या आकाप्रमाणे नोंदिली असे.

प्रस्तावना.

सांप्रत आपल्या देशांत ज्ञानाचा प्रसार करण्याकडे लोकांचे
लक्ष लागल्यामुळे व अपण्याच्या कलेची सुगमता झाल्यामुळे
धर्म, नीति, न्याय, व्यवहार, कर्म, उपासना, भक्ति, वैराग्य व
ज्ञानपर असे पुष्कल ग्रंथ लोकहितार्थ छापून प्रसिद्ध झाले आहेत,
व दिवसांदिवस लोकांस अशा ग्रंथांची विशेष अभिरुचि लाग-
ल्याने त्यांचा खपही बराच होत आहे. आत्मज्ञान व वेदांतपर
असे पुष्कल ग्रंथ छापून प्रसिद्ध झाले आहेत, परंतु सामान्य विचारी
मनुष्यांस ते ग्रंथ विशेष दुर्बोध असल्यामुळे त्यांस फार अडचणी
सोसांव्या लागतात. व या विषयीं कित्येक मित्रांच्या सूचना झा-
ल्यावरून मी हा लहानसा ग्रंथ तयार केला आहे. यांत जीं पदे,
अभंग, होऱ्या, गज्जल वगैरे पद्ये आहेत तीं एका अनुभवी साधु
पुरुषापासून मला मिळालीं आहेत; व ही पद्ये आत्मबोधार्थ विशेष
सुलभ आहेत असे वाटल्यावरून, त्यांचा लाभ माझ्या सर्व देशबं-
धुंस व्हावा ह्याच हेतूने हे 'वेदांतपर कविता संग्रह' नांवाचे पुस्तक
छापून प्रसिद्ध केलें आहे. यांतील विषयाचे परिज्ञान माझ्या प्रीय देश-
बांधवांस झाल्यास पद्यकाराचे व माझे श्रम सफल झाले असें होईल.
आशा प्रकारच्या परमार्थबोधक जुन्या कवितांचा संग्रह अपण्याचा
माझा प्रथमच यत्न असल्यामुळे त्यांत पुष्कल दोष असतील; परंतु
सुज्ञजन तात्पर्याकडे लक्ष पोंचवून दोषांची क्षमा करतील अशी
आशा आहे.

विशेष सूचना— या पुस्तकास ज्या देशबंधुंनी आपला उदार आश्रय दिला आहे व त्याचा प्रसार होण्याविषयीं ज्या मित्रांनी साह्य केले आहे त्यांचा हा पुस्तक प्रकाशक फार आभारी आहे. मुंबई जानेवारी मा० १८७९.

बालोवा नरसूजी.

॥ श्री ॥

वेदांतपर कविता संग्रह

॥ पदे ॥

मोहे लागी लटक गुरु चरननकी ॥ धु० ॥ चरण बिना
 मोहे कछु नही भावे ॥ झुटी माया सब सपनेनकी ॥ १ ॥
 भव जल सागर सुख गयो सब ॥ नही फिकिर मोहे
 तरननकी ॥ २ ॥ नीरद्वंद नारायण हासी खेले ॥ उलट
 विधि खुप नयननकी ॥ मोहे लागी० ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ २ ॥

है कोई ऐसा मुरशद मौला ॥ रगमे खुदा बतावेगा ॥ ल
 ख चौन्यासी फेरा चुकाके ॥ जनम मरनकू तोरेगा ॥ धु०
 पंच तनूके दरगा भीतर ॥ दिल तकियेकु बिछावेगा ॥ म
 न मक्कामे मुजे बिठाके ॥ बिसमिल्ला कलमा पढावेगा ॥
 ॥ १ ॥ आरश कुरश दीदार झोरा महेरम मेरा खुलावेगा
 उसके आंदर मुजे लिजाके ॥ नमाजके बयान सिकावे
 गा ॥ है ॥ २ ॥ सब जीवनका नुक्का घोटके ॥ ऐसा प्या
 ला पिलावेगा ॥ मेरा चेरा मुजे बताके ॥ नूर नबीमे भुला
 वेगा ॥ है ॥ ३ ॥ मीहं महं मद रसुलील्ला ॥ आलफ नाम नि

शा चढावेगा ॥ चौदा तबकके आंदर सुलाके ॥ मेरे तै झु
ला झुलावेगा ॥ है ॥ ४ ॥ बेचुनकु बेच गुनकु बे शुभाकु
दिखावेगा ॥ बे नमनकु बे भारीकु ॥ आयन आलिमे मि
लावेगा ॥ है ॥ ५ ॥ कहे कमाल कबीरका बालका ॥
तनकी किताब सुनावेगा ॥ बावन हरपका मायना बता
के ॥ भेद भरमकु मिटावेगा ॥ है ॥ ६ ॥

॥ पद ॥ ३ ॥

फकर मकर नही हम समजते ॥ सीना साफ फकीरहै ॥
आलफ नाम आल्हाका आशका ॥ आवर सरफ मंजुरी
है ॥ ध्रु ॥ लकीर उपर सनद फकीरी ॥ नुक्ते अंदर मुर
शदहै ॥ आरश कुरश दीदार झोरा ॥ महेरम मेरा दिखता
है ॥ फ ॥ १ ॥ मीहंमहंमद दिलके आंदर ॥ जो देखेसो
सच्चाहै ॥ अयन अली चस्मोके अंदर ॥ नुर नबीका बर
स्ता है ॥ फ ॥ २ ॥ आप ताप महीताप ज्योतमे ॥ दम्
पर दम् ये गुजरताहै ॥ बेचुन बेच गुन बे शुभा ॥ बे नम
न बे भारीहै ॥ दास नवलका सलाम सिसदा लाकलाम
हाजुरीहै ॥ फकर मकर नही हाम ॥ ६ ॥

॥ पद ॥ ४ ॥

रगमे खुदा खोज निकालो ॥ तन तकिया मन मक्काहै ॥
 मीहं महं मद झुले अंदर॥ रसुलीला लक लक्काहै ॥ ध्रु० ॥
 पंच तनूके दरगा आंदर ॥ आलफ नामका सीक्काहै ॥ अ
 यन अली गुल चमन खुलाहै ॥ बीन देखेका धक्काहै ॥
 ॥ रग० ॥ १ ॥ बे चुन बेच गुन निरंजन ॥ बे शुभाकु दे
 खवाहै ॥ बे नमनके दीद कसीदमो ॥ सो एक आशक
 पक्काहै ॥ रग० ॥ २ ॥ दास नवलका पीर आवलीया ॥
 नागेसर बली बाकाहै ॥ उन कीयाथा महरेमसो बानी ॥
 नबी नाम विठ्ठलका है ॥ रगमे खुदा खोज नि ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ ५ ॥

सुनबे सुन निरगुनकी बाता ॥ साधु संत कैलाता है ॥ अ
 र्थ छोड़के अनर्थ करता ॥ पोथी बाच सुनाता है ॥ सु०
 ॥ ध्रु० ॥ क्या निरगुन पोथीमें बैटा ॥ फेर केव तुजे नहीं
 पाताहै ॥ सच्चिदानन्दकी खबर न जाने ॥ झूटा दील ब
 हेलाता है ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ क्षर अक्षरका खोज किये
 बिन ॥ अजर नजर नहीं आता है ॥ ग्यान ध्यान निरगु
 न निरंजन ॥ सतगुरु नाथ बताता है ॥ सु० ॥ २ ॥ अ

मृत कहेसो कोन आमर भया ॥ बीख कहे कोई मरता
है ॥ ऐसा पंडित नित उठ पोथी ॥ बाच बाच पस्ताता
है ॥ सु० ॥ ३ ॥ सच्चा सत्गुरु नाथ निरंजन भव भंजन
दुख हरता है ॥ दास नवल कहे उनके कृपासे ॥ नय
नोमे नाम सुमरता है ॥ सुनबे सुन निरगुनकीबाता ॥
॥ सु० ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ६ ॥

सावध होउनी बाई आत्मा पाहि अपुला डोळागे ॥
॥ ध्रु० ॥ प्रत्यक्ष गुरुचे साक्षी चक्षु ॥ लक्षी घनसांवळागे ॥
त्रिकुट गिरीचे शिखरी ॥ क्रीडा करितो नाना परीगे ॥
रसने विण रस चाखे अलक्ष नांदे सर्वांतरीगे ॥ सा० ॥
॥ १ ॥ जागृती स्वम सुशुभ्री तूर्या भोगिती उन्मनी ना
रीगे ॥ चालक चिन्मय आत्मा नांदे ईद्रियाचे द्वारीगे ॥
होउनिया अनुभवी ब्रिश्वी वर्ते विश्वा कारीगे ॥ अनुहा
त नाद नसाहे आहे गगनाचे भीतरीगे ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष अ
नुभव असें जैसा ॥ अमलक हस्ता वरीगे ॥ संता शरण
जाई ते तुज दाविती आपुल्या करीगे ॥ कुंकुम मंदीर शू
भ स्पटीका मही गिरी वरीगे ॥ श्याम सुनील वर्तुल इंद्र

निळाचे कुसरीगे ॥ सा० ॥ ३ ॥ झळ झळ झळके स्वरू
प पाहे अंतरीचे अंतरीगे ॥ गुरुविण जो का निगुरा प्राणि
पडिला दुरिच्या दुरीगे ॥ गुरु विण जव हा प्राणी शब्द
संताचे गोफाटीगे ॥ दिसे तितुके नासे ऐशा सांगती भ्रमी
ष्ट गोष्टिगे ॥ आत्मा कळला नाही जप तप तीर्थे साधन
खोटीगे ॥ ज्ञानदेव ल्पणे न सुटे तया संसाराच्या गाठीगे ॥
सावध होउनि बाई आत्मा पाहि ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
॥ पद ॥ ७ ॥ (चाल बीहाग)

कमल नयन घन शाम तनुहो ॥ ध्रु० ॥ चंद्रानून रघु
राज बिराजे ॥ हस्तकी कांचन वाण धनुहो ॥ क० ॥ १ ॥
सुंदर नाशिक बींब सुधाकर ॥ कुंदर दन अति रम्य हनु
हो ॥ क० ॥ २ ॥ सज्जन रंजन रविकुल मंडण ॥ जन्मु
नि भूष वीभूष मनुहो ॥ कमल नयन घनशाम ॥ ३ ॥
॥ पद ॥ ८ ॥

कोणा काय ल्पणु ॥ उगाचमी ॥ ध्रु० ॥ ब्रह्म विलोकन
हा खेळ कैसा ॥ जगदाभास कनु ॥ उ० ॥ १ ॥ सच्चित
सुख हे मुळीचअसता ॥ कैचा भेद गणु ॥ उगा० ॥ २ ॥
अमृत समुद्री या द्वैताचा ॥ कोठे कुप खणु ॥ उ० ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ ९ ॥

चित्ता सर्वाची हरिला ॥ ध्रु० ॥ पक्षी पदरी संचय कै
चा ॥ चारा पुरवी तयाला ॥ ची० ॥ १ ॥ दर्दुर पाशा
णाचे पोटी ॥ जीवन देत तयाला ॥ चि० ॥ २ ॥ सिंहा
चा जो अहार जाणुनी ॥ कुंजर निर्मि तयाला ॥ चि०
॥ ३ ॥ मध्व मुनेश्वर विश्व रूपा सुखी ॥ हा नुपेक्षी कव
णाला ॥ चित्ता सर्वाची ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ १० ॥

श्री बाल मुकुंद ॥ चरण रज बंद ॥ ध्रु० ॥ देवकीके घर
जन्म लियो जद ॥ छूट परे सब बंद ॥ च० ॥ १ ॥ मथु
रा त्यजे हरी गोकुल आये ॥ नाम धरे जदुनंद ॥ च० ॥
॥ २ ॥ जमुना तीर कुद परो है ॥ फनपर नृत्य करंद ॥
॥ च० ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभु तुह्मारे दरसकु ॥ तुम ही आ
नंदकंद ॥ चरण० ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ ११ ॥

श्रीहरी मागे पुढे दाटला ॥ ध्रु० ॥ जिकडे तिकडे आप
णचि झाला ॥ स्वये सदोदित थाटला ॥ श्री० ॥ १ ॥ पा
द्वनिया निज रूप गुरुचे ॥ संशय समुळि आटला ॥ श्री०

॥ ੨ ॥ ਮਾਨਪੁਰੀਲਾ ਅਨੁਭਵ ਜਾਲੈ ॥ ਜੰਮ੍ਹ ਮਰਣ-ਸੱਖਾ
ਫਾਟਲਾ ॥ ਸ਼੍ਰੀਹਰੀ ॥ ੩ ॥

॥ ਪਦ ॥ ੧੨ ॥

ਗਗਨਕੇ ਬੀਚ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਹੈ ॥ ਵਾਬਾ ॥ ਧੁ ॥ ਬਾਹੋ ਚੰਦਾ +
ਡਾਬਾ ਸੁਰਜ ॥ ਦੌਨੋਕੇ ਬੀਚ ਲੁਪਾਨਾ ਹੈ ॥ ਬਾ ॥ ੧ ॥
ਸੁਰਤ ਸਵਾਗਨ ਸੇਜ ਬੀਛਿਹੈ ॥ ਤਪਰ ਚੰਦਰ ਤਾਜਾਹੈ ॥ ਬਾ ॥
॥ ੨ ॥ ਕਹੇ ਕਬੀਰ ਸੁਨੋ ਆਈ ਸਾਧੁ ॥ ਜੀਨ ਦੇਖਾ ਤਨ
ਮਾਨਾ ਹੈ ॥ ਬਾਬਾ ॥ ੩ ॥ ॥ ੪ ॥ ॥ ੪ ॥

॥ ਪਦ ॥ ੧੩ ॥

ਤੈ ਨਰ ਭਟਕੇ ॥ ਦੁਰ ਨਹੀਂ ਤੇਰਾ ਸਾਈਧਾ ॥ ਧੁ ॥ ਪੁਰਾ ਸੰਤ +
ਮਿਲੇ ਗੁਰੂ ਭਾਗਸੋ ॥ ਦੀਲਕੀ ਦੁਰਮਤ ਮਿਟਾਈਧਾ ॥ ਤੈ ਨਰ ॥
॥ ੧ ॥ ਮਨ ਚੰਚਲ ਕਹੁ ਜਾਨਨ ਪਾਵੇ ॥ ਤਜਦੇ ਮਾਨ ਬਢੀਧਾ ॥
ਤੈ ਨਰ ॥ ੨ ॥ ਆਸਨ ਥੀਰ ਨਾਥੀਕਪਰ ਨਿਧਨਾ ॥
ਲਖਲੇ ਸੁਰਤ ਲਗਾਈਧਾ ॥ ਤੈ ॥ ੩ ॥ ਗੰਗਦਾਸ ਤੇਰਾ ਪੀਛੁ
ਤੁਹੀਮੇ ॥ ਸੁਰਵਡਾ ਸਕਲ ਝਗਮਕਾਈਧਾ ॥ ਤੈ ਨਰ ॥ ੪ ॥

॥ ਪਦ ॥ ੧੪ ॥

ਬਾਗਨਮੋ ਨੰਦ ਲਾਲ ਚਲੋਰੀ ॥ ਅਹਾਲਿਰੀ ॥ ਧੁ ॥ ਚੰਪਾ
ਚੰਬੇਲੀ ਦਵਨਾ ਮਰਵਾ ॥ ਝੁਕ ਆਈਟਮ ਢਾਰ ॥ ਚ ॥ ੧ ॥

बागमो जायें दरसन पाये ॥ बिच ठाडे मदन गोपाल ॥
च० ॥ २ ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर ॥ वाके नयन बि
साल ॥ चलोरी ॥ वागनमोनंदलाल ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ १५ ॥

कृष्ण मेरे नजरोके आगे ॥ ठाडे रहोरे ॥ ध्रुव ॥ मै जो
बुरी श्याम अधर भलीहै ॥ भलीकी बुरी मेरे शब्दमो सा
रे ॥ ठाडे ॥ १ ॥ प्रीतको पैंडो बहोत कठिणहै ॥ चार क
ही दस आवर कंहोरे ॥ ठाडे ॥ २ ॥ मीराके प्रभु गिरधर
नागर ॥ प्रीत करे तो मेरा बोल सहोरे ॥ ठाडे ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ १६ ॥

चरण रज महिमा मैजानी ॥ ध्रुव ॥ याहि चरणसे गंगा
प्रगटी ॥ भगिरथ कुलतारी ॥ च० ॥ १ ॥ याही चरणसे
बीप्र सुदामा ॥ हरीकंचन धाम दिन्ही ॥ च० ॥ २ ॥ या
ही चरणसे अहील्या उधारी ॥ गौतम घरकी पट्टरानी ॥
चरण ॥ २ ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर ॥ चरण कम
लसे लपटानी ॥ चरण रज महिमा ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ १७ ॥

राधा प्यारे देढारोजी बन्सिहमारी ॥ ध्रुव ॥ ये बन्सीमे

मेरा प्रान बसतहै ॥ वो बन्सी गई चोरी ॥ १ ॥ ना सोने
की बन्सी ना रुपेकी ॥ हरे हरे बांसकी पेरी ॥ २ ॥ घड़ी
एक मुखमे घड़ि एक करमे ॥ घड़ीएक अधर धरी ॥ ३ ॥
मीराके प्रभु गिरधर नागर ॥ चरन कमलपर वारी ॥ रा
धा प्यारीरेदेडारो ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ १८ ॥

माई मौरे नयन बसे रघुबीर ॥ ध्रु ० ॥ कर शर चाप सु
सम चर लोचन ॥ ठाडे भये रनधीर ॥ १ ॥ ललित लवं
ग तब नागर लीला ॥ जब देखो तब धीर ॥ २ ॥ मीरा
के प्रभु गिरधर नागर ॥ बरसत कांचन नीर ॥ मा ० ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ १९ ॥

माई मैने गोविंद लीन्हो मोल ॥ ध्रु ० ॥ कोई कहे हाल
का कोई कहे भारी ॥ लियो है तराजु तोल ॥ १ ॥ को
ई कहे ससता कोई कहे महेगा ॥ कोई कहे अनमोल ॥
॥ २ ॥ बीद्रा जो बनके कुंज गलीनमो ॥ लीयो है ब
जाके ढोल ॥ ३ ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर ॥ पुरब
जनमके बोल ॥ माई मैने गोविंद ० ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ २० ॥

बन्सी तु कवन गुमान जरी ॥ ध्रु ० ॥ आपने तनपर छेद
परंये ॥ बाला ते विछरी ॥ १ ॥ जात पात हु तोरी मय
जानु ॥ तू बनकी लकरी ॥ २ ॥ मीराके प्रभु गिरधर ना
गर ॥ राधासे झगरी ॥ बन्सी तू कवन गुमान० ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ २१ ॥

पीहुकी बोलि न बोल ॥ पैया प्यारे ॥ ध्रु ० ॥ ते खो
लना मेरा जीय डरतहै ॥ तन मन डावा डोल ॥ पैय० ॥
॥ १ ॥ तोरे बिना मोकू पीर अवतहै ॥ जीयरा करुंगी
मै मोल ॥ प० ॥ २ ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर ॥ का
मनी करत कीलोल ॥ पैया० ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ २२ ॥

आपही खेल खिलाड़ी साहेब ॥ आपही धनक धारी
है ॥ ध्रु ० ॥ तंबु तो असमान बनाया ॥ जीमी दुलीच्या
डारा है ॥ चांद सुरज दो जरत चीराकी ॥ तेरी खुदरत
न्यारी है ॥ आ० ॥ १ ॥ पांच तत्वका किया पसारा ॥
तीरगुन माया सारी है ॥ चैतन पुरुष आप होय बैठे ॥ ये
ही अचंबा भारी है ॥ २ ॥ सुरत नुरतकी चौपट मांडी ॥

आप फासा जुगधारीहै ॥ फासा च्याहें जैसे जीतावे ॥
 सारी कवन बिचारीहै ॥ आ० ॥ ३ ॥ चार जुगकी चौ
 पट मांडी ॥ खेले नर अवर नारीहै ॥ तीन देव ज्याकी
 साक भरतहै ॥ पाप पुन आधिकारीहै ॥ आ० ॥ ४ ॥
 छके पंजेसो नरद बचावे ॥ बाजी कठन करारीहै ॥ ज्या
 की नरद पकी घर आवे ॥ सोही सुगड खिलारीहै ॥ ५ ॥
 सतगुरु सरन जो नर नही आवे ॥ जमके हात बिकाना
 है ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधो ॥ सब देहोमे ठीकाना
 है ॥ आपही० ॥ ६ ॥

॥ पद ॥ २३ ॥

देस हमारे आवो हंसा ॥ आजर अमर पद पावोजी ॥
 ॥ धु० ॥ देस हमारा आगम दुरहै ॥ भेद लावे जन को
 ई ॥ आती आदीन मिले जो बालक ॥ ताकु लेवो समो
 इरे ॥ देस० ॥ १ ॥ मातीकी भीत कसर पर जाये ॥ ऐ
 सा है संसाराजी ॥ जबलग उपर रहेत पुरीयन ॥ ऐसा हं
 स हमाराजी ॥ दे० ॥ २ ॥ चांद सुरज दिस ना रजनी ॥
 नही जम जाल पसाराजी ॥ खोल कपाट महेलमे ले
 उ ॥ देखो लोक हमाराजी ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे कबीर सु

नो भाई साधो ॥ हंसको देवो बडाईजी ॥ शेत सिंगासन
बैटक दीजे ॥ अजर अमर हौ जाईजी ॥ देस० ॥ ४ ॥
॥ पद ॥ २४ ॥

गुनका भेद है न्यारा साधो ॥ कोई जानन हाराजी ॥ ध्रु०
* साई गजराज कुल मंडन ॥ ज्याके मस्तक मोतीजी ॥
आवर सकल प्रानी भार लदेला ॥ महीसासुत के गोती
जी ॥ गुन० ॥ १ ॥ सोई सुंदर जाको पिंयाको बरतहै ॥
आग्या कारनलोपे जी ॥ आवर सकल सब कूत्ते बील्ही ॥
सुंदर नाम न सोभेजी ॥ गु० ॥ २ ॥ भुजंग ज्याके माथे
लालहै ॥ जोत उजारेमे खेले जी ॥ आवर सकल आव
नके कीडे ॥ जगत पाव तेरे पीले जी ॥ गु० ॥ ३ ॥ सो
ई सुमर जो जागृत रहियो ॥ जामे धातु निवासाजी ॥
आवर सकल सब कंकर फतर ॥ टाकी आगन प्रकासा
जी ॥ ४ ॥ कहे कबीर सोईज नुगरा ॥ नाम भजन आ
दिकारी है ॥ आवर सकल सोहेबका बाना ॥ देखो तंत
बीचारी जी ॥ गुनका भेद० ॥ ५ ॥
॥ पद ॥ २५ ॥

परखो शब्द निज सारा हंसा ॥ परखो शब्द निज सारा

जी ॥ धु० ॥ विन परखे कोई पार न पावे ॥ भुला जग
 संसाराजी ॥ सबही संत मिल जोहरी कहावे ॥ ना कोई
 पारख पाईजी ॥ पर० ॥ ੧ ॥ आयेथे बेपार करनकूँ ॥
 घरकी जमा गमाईजी ॥ बडे बडे साधु जन बानी ॥ छा
 नी राम भाग दोये कीनीजी ॥ प० ॥ ੨ ॥ आछर पार
 ख करलेना ॥ मन माया नहीचीनाजी ॥ सुकदेव मुनो
 पर आतम चीना ॥ आतम चिनी मायाजी ॥ ੩ ॥ पर
 आतम अजपाजप चेते ॥ नेह अछर भेद नही पायाजी
 अब तुम सुनो जोहरी मोठा ॥ खरा खोटा नही बुजेजी ॥
 ॥ ४ ॥ सिव गोरख सम ना कोई ॥ जोगी उनकूँ कौन
 ही सूजेजी ॥ जो कोई जगमे होवे जोहरी ॥ सो या प
 दकु बुझेजी ॥ प० ॥ ੫ ॥ कहे कबीर हम सबही देखो ॥
 सबही लोभको धावेजी ॥ सतगुरु मिले जीन पारख ल
 खाई ॥ टीक ढौरता हे सुजेजी ॥ परखो शब्द० ॥ ੬ ॥
 ॥ पद ॥ ੨੬ ॥

ग्यान कवनसे कहिये साधो ॥ ग्यान कवनसे कहियेजी ॥
 ॥ धु० ॥ कोई है ग्यान बिग्यान सो कोई है ॥ कैसे नि
 ज पद पायोजी ॥ कोई है जीव आवर ब्रह्मसो कोई

है ॥ कोई आछर है न्याराजी ॥ ग्यान० ॥ १ ॥ कोई
 है नामी आनामी कोई है ॥ कोन कहिये करतारा जी ॥
 बास्त्रेर भीतर व्यापक कोई है ॥ कोन ढौर काहा बासा
 जी ॥ ग्या० ॥ २ ॥ उतपत पर ले करे सो कोई है ॥
 कोही करे सकल तमासा जी ॥ कोई है सब्द का हार्ष
 लडवा ॥ करही आवाज आमोला जी ॥ ग्या० ॥ ३ ॥
 कहा टकसार होत अंतरमो ॥ कोन हावे ये बोलाजी ॥
 च्यार अवस्था पांचो मुद्रा ॥ जोग करे सो कोई है जी ॥
 मुक्त नाम कहे सो कोई है ॥ कोन सार निज पवनाजी
 ॥ ग्या० ॥ ४ ॥ ईतनी जुगत लेखेसो कोई है ॥ आलु
 ख नाम है काहाकाजी ॥ कहत कबीर सुनो भाई सा
 धो ॥ खोज करो तुम ताहाकाजी ॥ ग्यान कवनसे कहिये
 साधो ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ २७ ॥

सुनो सबदका जावा साधो ॥ सुनो सबदका जावाजी
 ॥ ध्रु० ॥ करो पछान जान जो पावे ॥ हासल सबही
 सावाजी ॥ ग्यान सोई जो उनमनी सुजे ॥ बालक सब
 बिगानाजी ॥ सु० ॥ १ ॥ ये रहनी चुके नही कबहूँ ॥

व्याहे न मान अमानाजी ॥ जीव सोई जो जुग जुग
 जीवे ॥ उतपत पर ले माहीजी ॥ सु० ॥ २ ॥ देही धेरे
 भरमे चौन्यासी ॥ निरभये कवहु नाही ॥ ब्रह्म सोई जो
 सब घट व्यापक ॥ नेह आचरते आईजी ॥ सु० ॥ ३ ॥
 ऊँकार आद सबहीके त्रिगुन ॥ गुन तंत ता माहीजी ॥
 नाम सोई ज्याके नही रूपा ॥ नही आछर सोई जाना
 जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ राम कृष्ण अवतार आदि देव ॥ धेरे
 निरंजन ध्यानाजी ॥ सबद सोई जो सबये यारो ॥ त्रि
 कुटी मे टकसाराजी ॥ सु० ॥ ५ ॥ कंठ द्वार होय बानी
 बोले ॥ निकसे मुखके द्वाराजी ॥ मन नही आवर छाय
 नहि मुद्रा ॥ मन करता तीहु लोकाजी ॥ ६ ॥ मुक्त नाम
 ताहेसो कहिये ॥ मीठगथा धंदा धोकाजी ॥ सार सबद
 है सबके उपर ॥ पवन पचासीको पाराजी ॥ उतपत प
 रले काल करतहै ॥ तहासे है ओ न्याराजी ॥ सु० ॥ ७ ॥
 कहे कबीर सुनो भाई साधो ॥ हमने कही सुनाईजी ॥
 जो कोई या पदकु बुजे ॥ सबही ठैरत है सुजेजी ॥
 ॥ सु० ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

॥ पद ॥ २८ ॥

— चंदा झलके सब घट माही ॥ आदि आखा सुजे कल्लु
 नही ॥ धु० ॥ घटहीमे झिल मिल जोत उजीयारा ॥
 दृष्ट बिना दिसे आंधियारा ॥ १ ॥ घटहीमे आनुहाद
 धुरे निशाना ॥ भयरा शब्द सुने नही काना ॥ २ ॥
 घटहीमे झीर मिर बरसे नीरा ॥ सिरपर साहेब खडा है
 हजुरा ॥ च० ॥ ३ ॥ कहे कबीर गुरु दयासो पाईये ॥
 खोल कपाट दिदार देखाईये ॥ चंदा झलके ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ २९ ॥

— जो तुम करीये कोटपाखंडा ॥ धरमराय लोडे नही दंडा ॥ धु० ॥ धरमराय सो दंड जो मागु ॥ अमकु कर
 कुडलग टांगु ॥ जो तुम करीये कोट पाखंडा ॥ १ ॥ ता
 रु गंगा तारु कासी ॥ तारु कृष्ण द्वारका बासी ॥ तारु
 तीन लोक की रानी ॥ तारु दुरगा आदि भवानी ॥ जो
 तुम० ॥ २ ॥ तारु तीन लोकके भूपा ॥ तारु निरंजन जो
 त सुहूपा ॥ चलवे बैकुण्ठ तुजेवी तारु ॥ थके तो प्रेम
 के ताजन मारु ॥ जो० ॥ ३ ॥ साहेब कबीर निरसल अ
 स बारा ॥ बेद किताब दोनोसे न्यारा ॥ ४ ॥ साखी बेद

कीताव हम देखे ॥ झुटी उनकी आसरे ॥ दोनों नरक
जायेंगे ॥ बेदनके ईसवासारे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ३० ॥

तै काय भुल्यो बनज्यारे ॥ लाधा च्याहे तु संग हमा
रे ॥ धु० ॥ जद हम ही लाधी मिसरी ॥ तब तुम काहे
कु लाधी खारी ॥ तै० ॥ १ ॥ अमृत छाँड हलाहल
काया ॥ लाभ लाभ करी मूल गमाया ॥ तै० ॥ २ ॥
कहे कबीर हम बन ज्या सोई ॥ ताते आवा गवन न
होई ॥ तै काय भुल्यो बनज्यारे ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ ३१ ॥

राम राय बिकल मत मोरी ॥ न जानो दुनिया दिवानी
तोरी ॥ ॥ धु० ॥ जो पूजा राम न भावे ॥ सोई पूजन
हार चढावे ॥ १ ॥ जो पूज्या राम भल माने ॥ सो पूज
न हार न ज्याने ॥ रा० ॥ २ ॥ कर भाव प्रेमकीपूजा ॥
कबहु भयोरेदेव न दुजां ॥ रा० ॥ ३ ॥ क्या करिये
बहोत पसारा ॥ पूजी जे सो पूजन हारा ॥ रा० ॥ ४ ॥
कहे कबीर मै गावा गावा ॥ मै आप लेखा जो पद मा
ही समाना ॥ सो पूजन हरसे आना ॥ राम० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ३२ ॥

आंधरे हरविन कोन तेरारे ॥ किसे कहत तू मेरा मेरारे ॥ धु० ॥ तज कुला करम अभिमाना ॥ झूटे भ्रम क्यारे भूलाना ॥ १ ॥ झूटे तनकी क्यारे बराई ॥ सो ये निमि स मोहे जरजाई ॥ २ ॥ जदलग मन ही विकारा ॥ तब लग नहीं छूटे संसारा ॥ ३ ॥ जब मन निरमल करजाना ॥ तब निरमल माही समाना ॥ आ० ॥ ४ ॥ जब पाप पुन भ्रम जारी ॥ तब भयोहे प्रकास मुरारी ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ कहे कबीर हर है ऐसा ॥ जाहा जैसा तहा तैसा ॥ आ० ॥ ६ ॥ झूटे ब्रह्म ब्रह्म पडे जीन कोई ॥ राजा राम करे सो होई ॥ आंधरे ॥ ७ ॥

॥ पद ॥ ३३ ॥

* हरिको नाम न लेत गव्हारा ॥ मन सोचत बार बारा ॥ ॥ धु० ॥ जब जन्मना तब मरना ॥ जम आगे लेखारे ॥ ज्याके जम सरीके बैरी ॥ वाकु कैसि आवे नींद गहेरी ॥ ह० ॥ १ ॥ पांच चौरगड मंज्या ॥ गड लुटे दीवस आवर संजा ॥ जाके गडपती गढमे होई ॥ गड लुटे सके ना कोई ॥ ह० ॥ २ ॥ बाजेगरने ढंका बज्याया ॥ सारा खल

क तमासाकु आया ॥ बाजेगरने डंका सकेला ॥ तब रह
 गया आप अकेला ॥ ह० ॥ ३ ॥ तुज दरसन देखा चैयें
 नीत दरपन मांजत रहियें ॥ ज्याके दरपन लागी काही ॥
 वाकु दरस काहासे पाई ॥ ह० ॥ ४ ॥ अंदीयारे दीपक च
 हीयें ॥ वाकु बस्त अगोचर पैयें ॥ जद बस्त अगोचर
 पाई ॥ तब दीपक राहा समाई ॥ ह० ॥ ५ ॥ तुजे बेल
 फुलचैयें ॥ तबी खासी चेत रहीयें ॥ जद बेल फुल फ
 ल आई ॥ फुलबारी फुलन छाई ॥ ह० ॥ ६ ॥ क्या
 पठिये क्या पुनिये ॥ क्या बेद पुरान सुनिये ॥ जद प
 ढत गुन सुक होई ॥ हम सहजा भया सोई ॥ ह० ॥
 ॥ ७ ॥ तुजे पार उतरना चैये ॥ ज्याके खेवठसे मिल
 रहीये ॥ जद पार उतर गये पारा ॥ तब कीत हम की
 त संसारा ॥ ह० ॥ ८ ॥ कहे कबीर सुजाना बोजो ॥
 जाना मेरे मन मानाजो ॥ मन माना तो न पतीजे ॥ पती
 जे तो क्या कीजे ॥ हरिको नामनले ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ ३४ ॥

हरि भज हरि भज एक चित्त लाव ॥ सुमर सुमर गो *
 विद गुन गाव ॥ ध्रु ॥ प्रथम देही जो धर आवे ॥ को



ਜਾਈ ਕਰੇ ਕਰਾਵੇ ॥ ਕੋਟ ਤੀਰਥ ਮੇ ਕਰੇ ਆਸ
 ਨਾਨੈ ॥ ਤੋਹੀ ਨਾ ਹੋਵੇ ਏਕ ਨਾਮ ਸਮਾਨ ॥ ਹ੦ ॥ ੧ ॥
 ਅਨੇਕ ਧਰ्म ਮਨਸੇ ਉਪਜਾਵੇ ॥ ਧੇਤ ਰਹੇ ਕਛੁ ਖਾਵੇ ਨ ਪੀ
 ਵੇ ॥ ਦਸਵੇ ਢਾਰ ਚਢਾਵੇ ਪ੍ਰਾਨ ॥ ਤੋਹੀ ਨਾ ਹੋਵੇ ਏਕ ਨਾਮ
 ਸਮਾਨ ॥ ਹ੦ ॥ ੨ ॥ ਕਾਧਾ ਪਲਾਟਨ ਕਰੀ ਬੜ੍ਹ ਜੀਵੇ ॥
 ਆਗਮ ਨਿਗਮਕੀ ਬਾਨੀ ਸੁਨਾਵੇ ॥ ਕੰਠ ਪਾਠ ਪਢੇ ਬੇਦ ਪੁਰਾ
 ਨ ॥ ਤੋਹੀ ਨਾ ਹੋਵੇ ਏਕ ਨਾਮ ਸਮਾਨ ॥ ਹ੦ ॥ ੩ ॥ ਧੰ
 ਚਾਗੀ ਜਲ ਤਪ ਕਰੇ ॥ ਸਿਦ्ध ਬਚਨ ਤਾਨਿਆ ਨਹੀ ਤਰੇ ॥
 ਗਗਨ ਸੰਡਲਸੋ ਲਾਵੇ ਜੋ ਧਿਆਨ ॥ ਸੋਹੀ ਨਾ ਹੋਵੇ ਏਕ
 ਨਾਮ ਸਮਾਨ ॥ ਹ੦ ॥ ੪ ॥ ਕਾਸਿਸੋ ਕਰਵਤ ਲੀਧੋ ॥ ਸ
 ਰੇ ਧੇ ਤਨ੍ ਧਿਕਾਲਾ ਗਾਲ਼ੇ ॥ ਤੋਲਾ ਬੈਟੋਂ ਦੇਵੇ ਜੋ ਦਾਨ ॥
 ਸੋਹੀ ਨਾ ਹੋਵੇ ਏਕ ਨਾਮ ਸਮਾਨ ॥ ਹਰਿ੦ ॥ ੫ ॥ ਜਿਆ
 ਪਰ ਗੁਰੂ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ॥ ਪ੍ਰੇਮ ਭਜਿ ਹਿਰਦੇਸੇ ਧਰੇ ॥ ਧੇ ਕਲ
 ਜੁਗਕੋ ਧੇਪਰਮਾਨ ॥ ਨਾਮਦੇਵ ਸੁਸ਼ੇ ਸ਼੍ਰੀ ਭਗਵਾਨ ॥ ਹਰਿ
 ਭਜ ਹਰਿ ਭਜ ਏਕ੦ ॥ ੬ ॥ ॥ ੪ ॥ ॥ ੪ ॥

॥ ਪੜ ॥ ੩੫ ॥

× ਸਤਗੁਰਕਾ ਸਰਮ ਨ ਜਾਨਾ ਸਾਧੁ ਭਾਈ ॥ ਦੇਖਵਤ ਜਗ ਗਵ
 ਰਾਨਾਜੀ ॥ ॥ ਪ੍ਰੁ੦ ॥ ਹੰਡੁ ਕਹੇ ਬੋ ਰਾਮ ਹਮਾਰਾ ॥ ਸੁਸਲ

मीन रहिमाना ॥ आपसमे दो लड़ लड मुवे ॥ दुबध्या
 मोल पढानाजी ॥ सा० ॥ १ ॥ केतेक नेमी धरमी क
 बहावे ॥ प्रात करे असनाना ॥ आतम मार पासानकु पू
 जे ॥ उनका कोन गिनानाजी ॥ स० ॥ २ ॥ केतेक पी
 र आवलिया कहावे ॥ पढत कीताब कुराना ॥ कहे हो
 मुरीद तकलीब बनावे ॥ उन्हे अल्ला नही जानाजी ॥ ३ ॥
 ईसबीद चलत कहे हामको ॥ आप कहावे शानाजी ॥
 कहे कबीर सुनो भाई साधो ॥ दोनोमे कोन दीवानाजी ॥
 सतगुरका मूरम न जाना ॥ साधुभाई ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ३६ ॥

आउंगा ना जाउंगा ॥ गुरुके हुकुमसे मै रामरस पीउंगा ॥
 ॥ धृ० ॥ तुमहो सिताफल ॥ हुमहो नीबुं ॥ तुमहो मुसल
 मान ॥ तुमहो हिंडु ॥ आ० ॥ १ ॥ तुमहो कुची तुमहो
 ताला ॥ तुमहो हमारे घरके रखवाला ॥ आ० ॥ २ ॥
 तुमहो सुई तुमहो धागा ॥ तुमहो दीगांवर येक नागा ॥
 आ० ॥ ३ ॥ कहे कबीर सुनो मोरे भाई ॥ हमकु रोवे
 तो वाकु राम दुहाई ॥ आउंगा० ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ ३७ ॥

गगन मंडलमो करो वासा ॥ आब दुजा देखो आजब
 तमासा ॥ ध्रु ० ॥ गड मेरो गगन ॥ सुरत मेरा चौका ॥ चै
 तन चवर दुरावेजी ॥ ग ० ॥ १ ॥ ईंगंला पींगंला सुखम
 न नारी ॥ अनुहात बीन नबजावेजी ॥ ग ० ॥ २ ॥ त्रिकुटी
 घाट आसनान जो करले ॥ रवि ससी संजम होईजी
 ॥ ३ ॥ हंसा खेल करे राजनसे ॥ एक महेल मे दोईजी ॥
 ग ० ॥ ४ ॥ अष्ट कमल दल पखूरी बनाई ॥ उलटा ध्या
 न लगायाजी ॥ ग ० ॥ ५ ॥ पांच पचीस एकन घर ला
 वे ॥ तबधुनकी सुधपावेजी ॥ ग ० ॥ ६ ॥ बीन बादल बी
 न बिजली चमके ॥ बिना सिपके मोतीजी ॥ ग ० ॥ ७ ॥
 कहे कवीर सुनो भाई साधो ॥ निरखो निरमल जोतीजी ॥
 गगन मंडलमो ० ॥ ८ ॥

॥ पद ॥ ३८ ॥

नयनांत बाई चंद्र उगवला ॥ अनंत भानु प्रकाश दाठ
 ला ॥ ध्रु ० ॥ सोहं सिंगी वाजती निशानी ॥ त्याणी ति
 चा नाद ऐकिला श्रवणी ॥ १ ॥ हिरवे पिवळे लाल शु
 भकाळे ॥ चिन्मय जोत मारिती झल्लाळे ॥ लय वो ल

क्ष त्रिकुटा वरती ॥ पाहूं जाता हिल्लाल दिसती ॥ न० ॥
 ॥ २ ॥ धनुष्य बाण लाविली कसोटी ॥ भेदलीबाई मा
 सोळी उफराटी ॥ नारायणाचे मालो चरण धरी ॥ सं
 जीवनी विद्या नेत्राचे अगरी ॥ नय० ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ ३९ ॥

कै बिरिया समजाउ ये मनकु ॥ मन मेरा नादान हुवा॥ *
 धु० ॥ जलही सारा जलही पसारा ॥ जलही सो परका
 स हुवा ॥ जलही हीरा जलही मोती ॥ जलही देख वे
 छ्हारा हुवा ॥ के० ॥ १ ॥ रहाढोडं नर उलट चलतहै॥
 उलट चले का कोन नफा ॥ बरज रही बर जो नही
 माने ॥ नही मानेतो हार जुवा ॥ के० ॥ २ ॥ गरभ वास
 नंर भक्ति कबुले ॥ जग आया सुध भूलगया ॥ बालक
 पनमे खेल गमाया ॥ भर ज्वानिमे मगरुर हुवा ॥ ३ ॥
 अधे नाम पर सिला तराई ॥ अधे पर संसार तरा ॥ क
 हे कबीर सुन भाई साधो ॥ सतगुरु संत सुजान मीला ॥
 कै बिरिया० ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ ४० ॥

बनसी गगन मध सुनी ॥ धु० ॥ मुल चक्र चीनो पहिले॥

बंद दे धरनी ॥ अरद उरदमे धुंद गरजे ॥ हिरदे जोत
 ठनी ॥ व० ॥ १ ॥ सबद चीनो पार उतरो ॥ छांडो मान
 मनी ॥ गंगा जमुना मिले सरस्वती ॥ झरत अमृत कनी ॥
 ॥ व० ॥ २ ॥ पीवेंगा कोई जोग जूगता ॥ सकल विख
 हरणी ॥ अष्ट दलपर कमल फुला ॥ जानत घ्यान गुनी
 ॥ व० ॥ ३ ॥ मानसरोवर मुक्त मोती ॥ चुंगत हंस मुनी ॥
 दुवादसेसो उलटा पवना ॥ गुंफा आधर करनी ॥ व० ॥
 ॥ ४ ॥ झगमग जोत अती निरमल ॥ तहा द्रिष्ट बनी ॥
 थके इंद्र महेस ब्रह्मा ॥ निगम शेस फनी ॥ कहे कबीर
 घ्यान गडमो ॥ अहल ब्रह्म धनी ॥ वन्सि० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ४९ ॥

जपो मन सुकृत सत्त कबीर ॥ ध्रु० ॥ हंस होयके चलो
 घरको ॥ उतरो भवजल तीर ॥ ज० ॥ १ ॥ चंद्र सुरज
 गगन नाही ॥ धरती नाही धीर ॥ ज० ॥ २ ॥ धुप छाया
 उष्ण नाही ॥ बरसे नाही नीर ॥ ज० ॥ ३ ॥ बाल तरुन
 दद्दु नाही ॥ त्रिगुण ताप शरिर ॥ ज० ॥ ४ ॥ करे आ
 नंद निरमल मुक्ता ॥ गये सुक नीसीर ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु
 गुट देके धीट होय बैटे ॥ बोढन अमर चीर ॥ ज० ॥ ६ ॥

मानक जोत अनुप चस्मानीं ॥ रखो आग सरीर ॥ ज०
॥ ७ ॥ धरमदास सतपुरुष पाये ॥ करम कागद चीर ॥
जपो मन सुकृत सत्त कबीर ॥ ज० ॥ ८ ॥

॥ पद ॥ ४२ ॥

आंजन आंजीये निज सोय ॥ धु० ॥ जाय आजंन त्रि
मीर नासे ॥ दृष्ट निरमल होय ॥ आं० ॥ १ ॥ सुगड धोबी
सरस सावन ॥ मयल डारे धोय ॥ आं० ॥ २ ॥ बयदसो
पर पीर मेटे ॥ बहोर न पीराहोय ॥ आं० ॥ ३ ॥ धोनुसो
जाके प्रेहे अप्रबल ॥ धोय लीजो बिनलोय ॥ आं० ॥ ४ ॥
ताहे पीया पियापास पहुँचे ॥ बहोर न पीवना होय ॥
॥ आं० ॥ ५ ॥ गुरुसो जो मूक्त दाता ॥ करम डारे धोय
॥ आं० ॥ ६ ॥ कहे कबीर जब एक दरसे ॥ एकसा दील
होय ॥ आंजन आंजीये निज सोय ॥ आं० ॥ ७ ॥

॥ पद ॥ ४३ ॥

रामको नाम सुमर मन मेरा ॥ जीवनका यैही नाता है ॥
॥ धु० ॥ घडि घडी पल पल कुच की बाजी ॥ अंतका
ल नही कोई तेरा है ॥ सिर तेरे घडियाला बाजे ॥ पाव
पलखमे गिरता है ॥ रा० ॥ १ ॥ काया नगरमे अपरम

राजा॥ पांच पचीस लेके रहेता है॥ सुरजका घोड़ा प्रानी
 चित्त चौगाना ॥ माया ममतामे फिरता है ॥ रा० ॥ २॥
 तन पिजंरेका तोता तेरा ॥ काल पडे उड जाता है ॥ ज
 ल तरंग तेरा बिसतारा ॥ लगी पवन उड जाता है॥रा०॥
 ॥३॥ नन्जे होयकर रहिये पडवा ॥ दबदे सोई झूटा है॥
 राजाके घर आजर आमर है॥ बिरला कोई नर पवच्या
 है ॥ रा० ॥ ४ ॥ जबलग सक्रुत कमल फुलमे ॥ तबल
 ग भवरा रहेता है ॥ सक्रुत सुक कमल मुरजाना ॥ जद
 भवरा उड जाता है ॥ रा० ॥ ५ ॥ सहस्र घडिया
 रेयटकु लागि ॥ उलटा कावा फिरता है॥ येक भरी ये
 क रिती आवे ॥ भरीकू रीती करेला है ॥ राम० ॥ ६॥
 है कोई ऐसा पैट नगरमे ॥ राम आदल चलता है ॥ बा
 हेर भीतर चोरन लागे ॥ चोरोसो नगरी बचाता है ॥ रा
 म० ॥ ७ ॥ वा घरकी मोहे कोई नाव बतावे ॥
 ज्या घरसे हंस आता है ॥ उड जावे तब कोन घर जा
 वे ॥ कहा जाय समाता है ॥ राम० ॥ ८ ॥ आब जल
 दास आहल अवीनासी ॥ सत सुकृतसे रहेता है ॥ सतगु
 रुके प्रतापकी चरना ॥ हरक हरक गुन गाता है ॥ राम

को नाम सुमर मन मेरा ॥ १ ॥ ॥ ४ ॥
 ॥ पद ॥ ४४ ॥

मेरी यक पलखकी बाट ॥ मुरक जनम गमायो ॥ धृ० ॥
 हाकम सोवे नहीरे ॥ सोवे बिचारी खाट ॥ मे० ॥ १ ॥
 दुध धोवे भैसकु ॥ भैस बिचारी नाट ॥ मे० ॥ २ ॥ क
 पड़ा तो धोबी धोवे ॥ धोबी किया सपेत ॥ मे० ॥ ३ ॥
 पानी तो कछु भयान जाने ॥ भयाविचारा खेत ॥ मे०
 ॥ ४ ॥ गधा तोजंमीकु चरता ॥ हाती चरे आकास ॥
 मे० ॥ ५ ॥ पीँड पाव साखा नही दिसे ॥ नही रगत ना
 मास ॥ मेरी० ॥ ६ ॥ पानीकी दुनिया जीसारी ॥ बीना
 पानी न समाय ॥ मे० ॥ ७ ॥ आवाज तो सबकोई सु
 नता ॥ जाहा पंछीना जो दिखाय ॥ मे० ॥ ८ ॥ बिना
 सिपके मोती निपजे ॥ परो न यनमे सार ॥ मे० ॥ ९ ॥
 कहे जनसींगा सुनो भाई साधो ॥ बीना सुरज उजीया
 र ॥ मेरी यक पलककी बाट ॥ १० ॥ ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ४५ ॥

काना कुबज्या संग रीझोरे ॥ काना मोरे कारि कामरि
 या ॥ धृ० ॥ मय जमुना जल भरन जात रामा ॥ सिर

पर घागरिया ॥ १ ॥ मैजी पेहरी चटक चुनरीया ॥
 नाक नथनिया बेसरीया ॥ का० ॥ २ ॥ बिद्रांजो बन
 के कुंज गलिनमो ॥ धेर लियो सब ग्वालनिया ॥ ३ ॥
 जमुनाके निर तीर धेनु चरावे ॥ नाक नथ नीचे बेसरी
 या ॥ का० ॥ ४ ॥ सुरदास प्रभु तुत्तारे दरसकु ॥ चरण
 कमल चित धरिया ॥ काना० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ४६ ॥

ग्यान कटारीमोहे कसकर मारी ॥ सतगुरुकी बल हारी
 धु० ॥ ग्यानका बान हिरदे विच लागा ॥ सबदका मा
 रा हो गया न्यारा ॥ १ ॥ नही मोहे ढाल नही तरवारी
 लगगई मोरे करेजेमे कारि ॥ २ ॥ ये मन मस्त कस्या न
 ही माने ॥ वाको संदेहे मै हारी ॥ ३ ॥ कहे कवीर सुनो
 आई साधो ॥ टुक टुक करडारी ॥ ग्यान कटारी ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ ४७ ॥

बैरन नीद काहासे आई ॥ सौई सौई सारी उमर ग
 माई ॥ धु० ॥ नीद कहे मै जमकी दासी ॥ येक हात मु
 छल येक हात फासी ॥ बैर० ॥ १ ॥ नीद कहे मै सबसे
 आरी ॥ ब्रह्मा विष्णु संकर छरिया ॥ बैर० ॥ २ ॥ कहे

कवीर कोई गुरु पद जागे ॥ उन नगरीकु डंक न लागे ॥
देखन नींद ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ४८ ॥

भले निदो भले निदो भले निदो लोगो ॥ तन मन राम
पीयारे जागो ॥ ध्रु० ॥ मै नवरी मेरो राम भतारा ॥
ताते रची रची करोहो सिंगारा ॥ १ ॥ जैसे धोबीया र
ज मल धोवे ॥ हरत परत सब नींद खोवे ॥ निदक मोरे
माई बापा ॥ २ ॥ जनम जनमके काटे पापा ॥ कहे क
बीर नींदक बलहारी ॥ आप रहे जनपर उतारी ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ ४९ ॥

क्या जाने घर भोंडु आपनी गुरुकी नाम नीशानीरे ॥
ये तन आंदर झुले कलंदर ॥ फकीर खडा निर्वानीरे ॥ ध्रु
चवडा तबक ताल उपर ॥ महाल खडा असमानीरे ॥ वौ
ही महालमो बालम चमके ॥ खेले चंदा रानीरे ॥ क्या
जा० ॥ १ ॥ गंगा जमुना सरस्वती संगम ॥ तीरथा तिर
थ तिरखेनीरे ॥ जनम मरनका धोका धोयले ॥ उलट
घडेपर पानीरे ॥ २ ॥ खोल पलखमे आलख सुभावन

झलक रहि है अपनीरे ॥ दस दरवाजे झरोके लागे ॥
आकुल चरक दीवानीरे ॥ ३ ॥ नाथ नवीके दास गोपा
ला ॥ चुप करत गुररानी ॥ नाथ नवीके कदमो उपर
छोड़दीये जीनगानीरे ॥ क्या० ॥ ४ ॥

॥ ਪੰਡ ॥ ੫੦ ॥

* खोज करो कोई ये तन आंदर॥ चली आजपकी माला
रे॥ इसवे मंदिर तारा लागे बुला नाथ गोपालरे॥ धु०
सहज समाधी मुद्रा लागी॥ लीया प्रेमरस प्यालरे॥
जात पात कुल भेद न जाने॥ लीया प्रेम नीवालरे॥ खो०
॥ १ ॥ लाल पिलेपर सफेद चोखा॥ तापर शाम सलो
नारे॥ उसके आंदर शाम सलोचन॥ नीकसत चंदा बा
लरे॥ खो०॥ २॥ नीपट नीरंजन चरपट मौला॥ ग
ले मोतनकी मालरे॥ आसन पाक दिलचाक नगी
ना॥ ले खोदि मृग छालरे॥ खो०॥ ३॥ नाथ नर्बीके
दास गोपाला॥ सच्या पीलाया प्यालरे॥ गुंग भई स
ब तन मन आखिया॥ तीन लोक उजीयालरे॥
॥ खो०॥ ४॥

॥ पद ॥ ५१ ॥

यारो झुलेमे झुलता है बाला ॥ खोलो नयन पियो ब्रह्म प्याला ॥ या० ॥ वीच बाजे बज्यावे बजंतर ॥ मस्त झुले झुकावे कलंदर ॥ रातो दिन जले धुनि अंदर ॥
खडा लाल पीला शाम निला ॥ यारो झुलेमे झुलता है बाला ॥ १ ॥ सातदर्यांका पाणि वहा भैता ॥ चबदा ताल उपर झमके मोती ॥ उन्मनि हात पकर लेके चलती ॥ लगी जोत देखे मन भुला ॥ यारो झुलेमे झुलता है बाला ॥ २ ॥ मनका दिलका उलट देखे फीरके ॥ मेरे गुरु साई सब भरके ॥ उनके चरण कमल चित्त चेला ॥ यारो झुलेमे झुलता है बाला ॥ ३ ॥

॥ पद ॥ ५२ ॥

कहानी ऐकुनि शाहणि जाहले मसि कुनि बोलू नका ॥
घरांत जाते उघडून पाहाते कुनासि सांगू नका ॥ ४ ॥
आंगणि बसते चोरुन खाते ॥ रहाते माजघरी ॥ तीर्हीस
रुसते चौथीस हासते केवढे नवल परी ॥ तीच्या बळा
नें चडता जातां पांचवी धरी पढरी ॥ मनाचे मनपण हा
रपुण गेले परपुरुषा उदरी ॥ पुरुष पाहून हर्ष ये झाला

पाही टकमका ॥ घरांत० ॥ १ ॥ नवाचे वरते दाहाचे
खालते चिमण्या गुजगुजती ॥ घरांत चांदणे चांदण्यांत
आंगण वीखरले मोती ॥ मोर येऊन खाउन जाती पुढे
उझे रहाती ॥ पुच्छे पसरुनी जिकडे तिकडे डोळे दाख
विती ॥ घालून सडे मी जातसे पुढे माझ्या संगे कोणी
येऊं नका ॥ घरांत० ॥ २ ॥ माझे घर अंधारांत आटकळु
न पडले ॥ सावध होता उघडून पाहाता कड कड कड
कडले ॥ जीव धडकला ज्वाळा भडकल्या कसी गत
गे पुढली ॥ गुरुचे चितन करिता सहजची संमाधी सां
पडली ॥ समाधी ल्लणता मौन्यच झाले दूर झालीसें
का ॥ घरांत० ॥ ३ ॥ जोतीत जोती परम जोती भीन्ल
ता नाही ॥ सुखांत सुखते परम सुख म्या देखाले वा
ई ॥ कहानी सरली शाहाणी विसरली सद्गुरुचे पाई ॥
भलीच केली मात त्वां नरदेही आगे वाई ॥ गुंडा स्मर
णे वीरा वीराला फिरसी वण वण कां ॥ घरांत जाते उ
घडून पाहाते कुणासि सांगू नका ॥ ४ ॥

॥ पद ॥ ५३ ॥

आज लहु निर्वानि गुरुजी आज लहु निर्वानि ॥ धु० ॥

तुमारे चरन पर दूबा रखु ॥ सीस करु खूर्बान ॥ १ ॥ गुरुजी ०
 पांच पचिस हाती स्थाहु ॥ उपर लाल निशान ॥ २ ॥
 ॥ गुरुजी ० ॥ एकविस हजार छेसो घोडे ॥ हात लिये
 नव बान ॥ ३ ॥ गुरुजी ० ॥ च्यारों मेहलमे धूम मच्हाहै ॥
 किया मूलुख मैदान ॥ ४ ॥ गुरुजी ० ॥ दास तूका कहे
 सलाम हमारा ॥ लगा उन्मनि ध्यान ॥ ५ ॥ गुरुजी ० ॥
 ॥ पद ॥ ५४ ॥

पिरोका प्याला पीनावे ॥ आपही पीर होनावे ॥ ध्रु ० ॥
 उस प्यालोमे येही करामत सुनो मुसलमीन जाई ॥
 फिक्रीर छुटे फकीर होवे कहते मौला साई ॥ पि ० ॥ १ ॥ वी
 ना चिराख झगमग जोती बोही रुफल जये साच्या ॥ मन
 मुरदा तै रहत न्यारा खुले आरस दरवाज्या ॥ पि ० ॥ २ ॥
 बंदा होकर जीकर करे उसकी जीकर तूटे ॥ बही जावे
 जीस्त पावे जमकी लाती फाटे ॥ पि ० ॥ ३ ॥ बालानंद
 कहे समालो सब घट साई अपना ॥ उस बीना घट
 खाली नही येही पिरोका देना ॥ पिरोका ० ॥ ४ ॥

अभंग प्रारंभ.

आर्धी नमु निरंजन रूपा ॥ दत्त मूर्ती गुणस्वरूपा ॥ १ ॥
 निर्गुण निराकार एक ॥ तोची मायेचा चाळक ॥ २ ॥
 ब्रह्मा विष्णु त्रीनयन ॥ तिन्ही रूपें येकची जाण ॥ ३ ॥
 तुका क्षणे शरण जावे ॥ गुरु पदी तद्रूप व्हावें ॥ ४ ॥
 ॥ आभंग ॥ २ ॥

झालासी पंडित पूराणे साधसी ॥ परी तू नेणसी मी हे
 कोण ॥ १ ॥ गाढा भरि फोथ्या उलधिसी पाने ॥ गुरु
 गम्य रवूण नेणसीतु ॥ २ ॥ तुकाक्षणे नाम आहे तेवेग
 ले ॥ कोणासी नक्ळे सद्गुरु विण ॥ ३ ॥
 ॥ अभंग ॥ ३ ॥

भेटे नारायण करिता जरी स्मान ॥ तरीकां थोडे मीन
 उदका माजी ॥ १ ॥ एक दुधा धारी वर्जितो आहार ॥
 भक्षूनिया वारा सर्व थोडे ॥ २ ॥ आयाचीत वर्ना दावि
 ते निवाडा ॥ तरीकां पक्षी थोडे चातकही ॥ ३ ॥ गुंफा
 हे पाताळी एकांताची ढाळी ॥ तरीकां थोडे बीळी उंदी

रहे ॥ ४ ॥ लाउनिया राख सर्वंग पांढरे ॥ तरिकां थोडे खेरें उकरङ्घा ॥ ५ ॥ मोहन धूनी ध्यानी बहु एक ॥ तरीकां थोडे बक जळा माजी ॥ ६ ॥ तुकाल्पणे सर्व साधन हे बायां ॥ शरण गुरु राया गेल्याविण ॥ ७ ॥

॥ अङ्ग ॥ ४ ॥

कल्पनेचे देव कल्पांती नासती ॥ ऐसी वेदश्रुती बोलताती ॥ १ ॥ बोलताती श्रुती सर्व नाशिवंत ॥ जाणिजे शास्त्रत परब्रह्म ॥ २ ॥ ब्रह्मते जाणावे आकाशा सारिखे ॥ सत्यते स्वरूप वेगळेची ॥ ३ ॥ वेगळेच परी भरले सर्वा ठाई ॥ रीता ठाव नाहीं तया वीण ॥ ४ ॥ तया वीण रीता ल्पणती अज्ञान ॥ रामदासे खूण सांगितली ॥ ५ ॥

॥ अङ्ग ॥ ५ ॥

आहो चंद्र सूर्य कोण ॥ कोठे मेरुचे आसन ॥ १ ॥ अवघा वायु आहे किती ॥ त्याची कोण्या ठारीं वस्ती ॥ २ ॥ आहो चिकूट ते कोण ॥ कोठें सत्रावी आसन ॥ ३ ॥ अर्ध मात्रा कोठे आहे ॥ दास ल्पणे शोधुन पाहे ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ६ ॥

नेत्र चंद्र सूर्य जाण ॥ नाक मेरुचे आसन ॥ १ ॥ अव्र
धा वायु एक मुष्टी ॥ त्याची दशवेद्वारीं वस्ता ॥ २ ॥
मुख आहे त्रिकूट जाण ॥ जीभ सत्रावी आसन ॥ ३ ॥
अर्ध मात्रा कंठी आहे ॥ दास ल्लणे शोधुन पाहे ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ७ ॥

माया तेची माता जीव शिव पीता ॥ अवस्ता त्या कां
ता जाण वापा ॥ १ ॥ सुत तेची भाव विश्वास हे दोघे ॥
बंधु जाण चौघे पुरुषार्थ ॥ २ ॥ दशक इंद्रीये त्या जा
णा बहीनी ॥ शांती क्षमा तीन्ही कन्या झाल्या ॥ ३ ॥
भाव भक्ती यासी झाले स्वयें लग्न ॥ देखताची मग्न ची
त वृत्ती ॥ ४ ॥ ज्ञानदेव सांगे उकल पैयांचा ॥ दुर्जी
याची वाचा अनिर्वाच्य ॥ ५ ॥

॥ अङ्ग ॥ ८ ॥

कोठे आहे मन ॥ कोठे आहे तो पवन ॥ १ ॥ कोठे आहे
ब्रंसपती ॥ कोठे आहे विष्णु मूर्ती ॥ २ ॥ कोठे आहे
त्रिनयन ॥ कोठे गणपती आसन ॥ ३ ॥ दास ल्लणे शोधु
न पहावे ॥ नाहीं तरी गुरुसी पुसावे ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ९ ॥

आहो ल्हदर्या आहे मन। नाभीं आहे तो पवन ॥ १ ॥ श
रीर आहे ब्रह्मपती ॥ नाभीं आहे विष्णु मूर्ती ॥ २ ॥ ब्र
ह्लांडी तो त्रिनयन ॥ मध्ये गणपती आसन ॥ ३ ॥ दास
ह्लणे बोलखुन पहावे ॥ नाहीं तरी गुरुसी पुसावे ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ १० ॥

सोहं तोचि सद्गुरु राव ॥ त्याचे चरणी ठेवा भाव ॥ १ ॥
सोहं समाधि साधिता ॥ मुक्त होयरे तत्वता ॥ २ ॥ सोहं
समाधि वांचून ॥ व्यर्थ माय शिनली जाण ॥ ३ ॥ तुका
झाला तेथे लीन ॥ सोहं समाधी तल्लीन ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ११ ॥

चारी हकारिती ध्यान ॥ सोहं समाधी लागून ॥ १ ॥ ने
ती नेती ह्लणोनिया ॥ शरण आलों स्वामी राया ॥ २ ॥
दावी आपुले स्वरूप ॥ अठरा जनी करिती तप ॥ ३ ॥
तुका ह्लणे काय बोलूळ ॥ सोहं समाधींत खेळूळ ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ १२ ॥

सोहं स्वरूप हे जाण ॥ नकळे सद्गुरु वांचून ॥ १ ॥ सद्गु
रुसी शरण जावे ॥ चारी शून्या पार व्हावे ॥ २ ॥ पार

होवोनिया वेगे ॥ सोहं ब्रह्म रहावे मागे ॥ ३ ॥ आतां उ
रले नाहीं काहीं ॥ तुका लोळे सद्गुरु पाई ॥ ४ ॥
॥ अङ्ग ॥ १३ ॥

उरले सोहं स्वरूप जाण ॥ हेची वोळखावे पूर्ण ॥ १ ॥
पूर्ण वोळख जेथे झाली ॥ काय बोलू त्याची बोली ।
॥ २ ॥ बोली बोलता बोलवेना ॥ वाचेस आले मौन्य
पणा ॥ ३ ॥ परा पश्यंतीचे स्थानीं ॥ उठे उन्मेश प्रति
ध्यनी ॥ ४ ॥ मध्यमेचे स्थानी पहाता ॥ रूप उभे झाले
आतां ॥ ५ ॥ वैखरी वाचा हो बुडाली ॥ तुका ल्लणे ये
कची वेळी ॥ ६ ॥

॥ अङ्ग ॥ (चार चरणी) ॥ १४ ॥

आहोजी तुक्का करावा प्रश्न ॥ तो तुक्की आधीचीसर्व
झ ॥ जे मी जित जित बोले लीन ॥ होउनिया ॥ १ ॥ जरी
दयाळासी शब्द घडे ॥ अनंत जन्माचे सुकृत जोडे ॥
की पिपिलीका मार्ग चढे ॥ अर्धऊर्ध्व ॥ २ ॥ कैसे उ
न्मनि सुस्तावली ॥ ब्रह्मांड मिळूनी प्रसवली ॥ औटपी
ट दुमडुमिली ॥ मौन्य मुद्रा ॥ ३ ॥ साधकाची तटस्थ
टाळी ॥ वांधली दीसे परी मोकळी ॥ विद्युल्लता ऐसी

झळाळी ॥ अंतर बास्य ॥ ४ ॥ परा परा ती सोभाग्यनी ॥
 अनुभवे वरी दिसे नयनी ॥ योग माया कुळस्वामिनी ॥
 कनक कलीका ॥ ५ ॥ ज्ञानेश्वराची आर्थीली ॥ कैसी
 सार स्वहिता मथीली ॥ ते सोपान देवा झाली ॥ कर
 तळामळा ॥ ६ ॥

॥ अङ्ग ॥ १५ ॥

कैसा डोळियांत डोळा फुटे ॥ तेणे प्रकाशले औट पीट ॥
 ब्रह्मांड आणि घटमट ॥ सारिखेची झाले ॥ १ ॥ तेथे
 देह भाव निसरे ॥ अवघा प्रकाश पसरे ॥ अंगुष्ठ मात्र
 प्राणेश्वराठळठळूळ लागे ॥ २ ॥ रातो पर पंकिचा अँकारा ॥
 रस्मी झळकती सतारु ॥ विद्युल्ता लवे अणु भरू ॥ मा
 झी या डोळा ॥ ३ ॥ लागो नेदी पलख पापणी ॥ अती
 चपळ कुळलनी ॥ जे सत्रावी पट्टराणी ॥ जिव मातृका
 ॥ ४ ॥ जे आजपाची दुम दुमाट ॥ थोडी परी सदट ॥
 प्राणनाथे देहा सगट ॥ गिळुनी ठेवी ॥ ५ ॥ ज्ञानेश्वरा
 ची परम भुली ॥ सोपानाची गुरु माउली ॥ विश्व भा
 ग्ये उदय झाली ॥ समाध बापा ॥ ६ ॥

॥ अङ्ग ॥ १६ ॥

कृतांत मार्तडाचे माहेर ॥ वळला दिसे उदय दिवाकर ॥
 कांही रस्मीचा विकार ॥ भासूं लागे ॥ १ ॥ वरी शुभ
 आभास मिरवे ॥ सोहं शब्द रव रवे ॥ प्रकाश कांहीं
 अंधार फावे ॥ दिसों लागे ॥ २ ॥ सर्व विकाशोनीं गे
 ली ॥ सुनिल अंधारी पुढे आली ॥ वरी प्रभा फांकली ॥
 उदय जैसी ॥ ३ ॥ कैसी येथे उठावली ॥ श्याची देही
 मावळों गेली ॥ निधान राहे ती राहिली ॥ शून्य कलि
 का ॥ ४ ॥ दयाळा ज्ञानेश्वरा समर्था ॥ वरद हस्त ठेवि
 ला माथा ॥ सोपान भरूनी वरुता ॥ वोसंडला ॥ ५ ॥

॥ अङ्ग ॥ १७ ॥

विश्व ब्रह्म सनातन ॥ ऐसे व्यतिस आले ध्यान ॥ सद्गुरु
 कृपेने साधन ॥ सार झाले ॥ १ ॥ ऐसा जे योग पहाती ॥
 पुन्हा मागुता जन्म न घेती ॥ त्या गुरु गम्याच्या विभूती ॥
 सार झाल्या ॥ २ ॥ कैसे रूप एक वटले ॥ माया आधारे कि
 टले ॥ कीं निदान रहाणे विनटले ॥ प्रकाशी आत्मा ॥ ३ ॥ कीं
 गुस्य सुखाचे बळ ॥ प्राप्तीयोगाचे फळ ॥ हे माझे मी एक
 पळ ॥ विसरों नेढी ॥ ४ ॥ ज्ञान सरितेंत पोहिलो ॥ आणि

परा वरती गेलों ॥ देह सागर ज्ञालों ॥ परब्रह्म ॥ ५ ॥ हे
बोला आबोलणे ॥ ध्याना ध्यान विसर्जन ॥ देवादी दे
व पूर्ण ॥ स्वयंभु लिंगाकार ॥ ६ ॥ निवृतिज्ञान बुद्धि ई
श्वर ॥ मुक्त गंगा निर्विकार ॥ जो हा चतुर्विधाकार ॥
सोपान आधी ॥ ७ ॥

॥ अङ्ग ॥ १८ ॥

लोळू लागे परे वरी ॥ सूर्य खेळती मजवरी ॥ मी त्या
च्या वरोवरी ॥ धांबो लागे ॥ १ ॥ तेथे अनू भरी नसे
वाट ॥ निवीड भरले सुनिळ घोंट ॥ भरोनी उरले कों
दाट ॥ एकसरे ॥ २ ॥ तेथे स्वरूपची निर्मळ ॥ निर्गुण नि
र्विकाराचा खेळ ॥ तत्व पाहिले राउळ ॥ आगम्याचे ॥
॥ ३ ॥ ते बैसले माझ्या डोळां ॥ मज सारेची बांधिले
गळां ॥ त्या सुखाचा सोहळा ॥ बोलता नये ॥ ४ ॥
मुक्त बुबूळे जडित कोंदणी ॥ ज्ञान कळा सोपी देखणी ॥
निवृत्ति वैराग्याची कुळस्वामिनी ॥ मूळ माया ॥ ५ ॥

॥ अङ्ग ॥ १९ ॥

अनाथ नाथ आलिंगन ॥ पुण्य पुरुषार्थ धरी कवळून ॥
सत्य सुकृताचे आसन ॥ भव्यदिव्य ॥ ६ ॥ खूण नेट

ली निपुटी माथा ॥ निवांत वारा झळके वियुहुता ॥
 तेथील प्रारंभ देखता ॥ लाभ झाला ॥ २ ॥ वैराग्य सु
 कृताचे सुरु ॥ कैसे झळकती सतारु ॥ शेंदुरे पारवै पक्षी
 वरु ॥ कुंडलाकार ॥ ३ ॥ ते मूळपीट कुळस्वामिणी ॥
 शेंदुरे भरली कुंडलनी ॥ कनक कांती शून्य कानी ॥
 झगझगु लागे ॥ ४ ॥ सद्गुरु आश्रयाचा धडा ॥ एक
 सरा वाचिला पाडा ॥ आंगा लागू पाहे रगडा ॥ चक्रा
 काराचा ॥ ५ ॥ खद्योत गलबला थोर झाला ॥ निवृत्ति
 वोध मिरवू लागला ॥ ज्ञानदेव येणे झाला ॥ सर्व
 सुखी ॥ ६ ॥

॥ अंग ॥ २० ॥

क्या गाऊं कोई सुनने वाला ॥ देखेतो सब जगही भूला
 ॥ १ ॥ खेलो अपने रामही सात ॥ जैसी वैसी करहो
 मात ॥ २ ॥ कांहांसे लाऊं भधुरा वानी ॥ रीझे ऐसी
 लोक विरानी ॥ ३ ॥ गिरिधर लाल तो भावका भूका ॥
 राग कला नहि जानत तूका ॥ ४ ॥

॥ अंग ॥ २१ ॥

छोडे धन मंदीर बन वसाया ॥ मागत टुकडा घर घर

खाया ॥ १ ॥ तीनसो हम कहुं सलाम ॥ ज्यामुख वैठा
राजाराम ॥ २ ॥ तुलसिकि माला बझूत चढ़ावे ॥ हरि
जीके गुण निर्मल गावे ॥ ३ ॥ कहे तुका जो साइं हमा
रा ॥ हीरनकश्यप जिन्हे मारा ॥ ४ ॥

॥ अभंग ॥ २२ ॥

मंत्र तंत्र नहि मानत साखी ॥ प्रेम भाव नहि अंतर रा
खी ॥ १ ॥ राम कहे ताके पगहुं लागूं ॥ देखत अभिमा
न दुर भागूं ॥ २ ॥ अधिक याति कुलहि नहि जानु ॥
जाने नारायणसो मानु ॥ ३ ॥ कहे तुका जीव तनु धन
डारी ॥ राम उपासी हुं बलीयारी ॥ ४ ॥

॥ अभंग ॥ २३ ॥

चुरा चुराकर माखन खाया ॥ गबलनीका नंद कन्हैया
॥ १ ॥ कहे बराइ दिखावत मोही ॥ जानत हुं प्रभु तेरि
खुबाई ॥ २ ॥ और वात सुन उखलिसु गला ॥ बाँध
लीया आपना गोपाला ॥ ३ ॥ फेरत वन बन गउ चरा
वत ॥ कहे तुकया लकरी ले हात ॥ ४ ॥

॥ अभंग ॥ २४ ॥

हरिसुं मीलदे एकही वेर ॥ पाछे तूं फीरना आवो घेर

॥ १ ॥ मात सुनो दुति आवे बना बना ॥ जाया कहती
भर जोबना ॥ २ ॥ हरि सुख मोहि कहिया न जाय ॥
तब तूं बुझे आगे पाय ॥ ३ ॥ देख हि भाकलु पकरी
हात ॥ मील लिया तूका पञ्च सात ॥ ४ ॥

॥ अंग ॥ २५ ॥

क्या कहुं नहीं बूझत लोका ॥ लीजावे जम मारत ध
का ॥ १ ॥ क्या जीवनेकि पकड़ी आस ॥ हात लिया
नहि तेरा घास ॥ २ ॥ कीसे दिवानें कहता मेरा ॥ कलु
जावे तन तुं सब न्यारा ॥ ३ ॥ कहे तुका तूं जया दिवा
ना ॥ आपना विचार करले जाना ॥ ४ ॥

॥ अंग ॥ २६ ॥

कब मरुं पाऊं चरण तुल्मारे ॥ ठाकुर मेरे जीवन प्यारे
॥ १ ॥ जग रोवे ज्यांकुं सो मोही मीठा ॥ मीठा दर आ
नंद सोहि पैठा ॥ २ ॥ भला पाहुं जनम इन्हें वेरे ॥ सब
माया के आसंग फेरे ॥ ३ ॥ कहे तुका धन मान हि दा
रा ॥ बोहि लीये गुडली पसारा ॥ ४ ॥

॥ अंग ॥ २७ ॥

दासों पीछे दौरे राम ॥ सोवे खडा आपे मुक्राम ॥ १ ॥

प्रेम रसीसें बांधे गले ॥ खैच लेले उधर चले ॥ २ ॥
 आपनें जन सूं भूल न लेवे ॥ कर धर आघे बाट बता
 वे ॥ ३ ॥ तुकयाको प्रभु दीन दयाला ॥ वारिरे तुजपर
 हुं गोपाला ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ २८ ॥

ऐसा कर घर आवे राम ॥ और सब धंदा छोरहि काम
 ॥ १ ॥ इतनें गोते काहे खाता ॥ जब तूं आपना सुली
 न होता ॥ २ ॥ अंतर जामि जानत साचा ॥ एकहि म
 नमें उपर बाचा ॥ ३ ॥ तुकयाको प्रभु देश बिदेश ॥ भ
 रीया खाली नहीं कछु लेश ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ २९ ॥

मेरे रामका नाम जो ले बारोबार ॥ तांके पाउं मेरे तन
 कि पैजार ॥ १ ॥ हासत खेलत चालत बाट ॥ खाना
 खाते सोते खाट ॥ २ ॥ जात तन् मुजे कछु नहि प्यार ॥
 कांहांके हिंदु धेड चंभार ॥ ३ ॥ जांके चित्त लगा रा
 मको पाव ॥ कहे तुका मेरा शिस तांके पाव ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ३० ॥

आप तरे वाकि कोन बडाई ॥ आवरनकुं भली नाव
धराई ॥ १ ॥ काहे भार भूमि इतना राखे ॥ दूभत धे
नू नहीं दूध चाखे ॥ २ ॥ बरसे मेघ फल तोही बीरखा ॥
कोन काम आपनि उणो तिरखा ॥ ३ ॥ काहे चंदा सु
रज खावे फेरा ॥ खीन एक बैठ न पावत धेरा ॥ ४ ॥
काहे परिस कंचन करे धातु ॥ नहीं मोल तुटत पावत
धातु ॥ ५ ॥ कहे तुका उपकारहि काज ॥ सब करके
रहिया रघुराज ॥ ६ ॥

॥ अङ्ग ॥ ३१ ॥

जग चले उस घाट कोन जाय ॥ नहिं समजत फीरे
गोते खाये ॥ १ ॥ नहीं एक दो सकल संसार ॥ जो बु
झे सो आगला स्थार ॥ २ ॥ उपर स्थार बैठे कृष्ण पीठ॥
नहिं बचे कोई जावे लुट ॥ ३ ॥ देखत हि डर केर
बैठा तुका ॥ जावत मारग रामहि एका ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ३२ ॥

भलेरे भाई जिन्हे किया चिज ॥ अच्छा कछु नहिं मी
लत बीज ॥ १ ॥ फीरत फीरत पाया सारा ॥ मीलत लो

ले धन किनारा ॥ २ ॥ तीरथ वरत फीर पाया जोग ॥
नहीं तलमल तुटत भव रोग ॥ ३ ॥ कहे तुका मै तौको
दास ॥ नहि सार आर चलावे पास ॥ ४ ॥

॥ अंग ॥ ३३ ॥

लाल कमलि बोढ़े पेनाये॥ मोसु हरी तै कैसे बनाये॥ १॥
कहे सखी तुझे करति सोरा॥ हिरदा हरिका कठिन कठो
र ॥ २॥ नहि क्रिया सरम कछु लाज ॥ और सुनाउं ब
हुत हे भाज ॥ ३॥ और नाम रूप नहि गोवलिया ॥
तुका प्रभु माखन खाया ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

॥ अंग ॥ ३४ ॥

राम कहो जीवना फल सोही ॥ हरि भजनसे बिलंब न
पाइ ॥ १ ॥ कवनका मंदिर कनक झोपरी ॥ एक राम
बिन सबहि फुकारी ॥ २ ॥ कवनकी काया कवनकी
माया ॥ एक राम बीन सबही जाया ॥ ३ ॥ कहे तुका
सबहि चलणारा ॥ एकराम बिन नहि हवां सारा ॥ ४ ॥

॥ अंग ॥ ३५ ॥

काहे रोवे आगले मरना ॥ गंव्हार तुं तो भुला आपना
॥ १ ॥ केर ते तालु मनहि पारे॥ नन्हे बरे गये हि सारे

॥ २ ॥ वाप जाईकु लेखा नही॥ पाछेबि चलनारा तुंही
 ॥ ३ ॥ काले बालसो सपेत भये ॥ पकडो खबर तुका
 कहे ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥

॥ अङ्ग ॥ ३६ ॥

क्या मेरे राम कवण सुख सारा ॥ कहकर दे पुछुं दास तु
 लारा ॥ १ ॥ तन जोबनकी कोन बराई ॥ व्याध पिडा
 सब काट हि खाई ॥ २ ॥ कीर्त बधाउं तो मन मेरा ॥
 काहे सुटां पछेत उघेरा ॥ ३ ॥ कहे तुका नहि समज
 त मात ॥ तुम्हे शरण हे जोडत हात ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ३७ ॥

देखो आखो सुंटा कोरा ॥ तो काहे छोरा घरबारा ॥ १ ॥
 मनसुं किया चाहिये पाख ॥ उपर खाक पसारा राख
 ॥ २ ॥ काम क्रोध सों सब सारा ॥ वो सीर भार चलाके
 खरा ॥ ३ ॥ कहे तुका सों संन्यास ॥ छोडे तन कीही
 आस ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ३८ ॥

राम भजन सब सार मिठाई ॥ हरि संताप जन दुःख रा
 ही ॥ १ ॥ दुध भात घृत साकर पारे ॥ हरते भूक नहि अ

नेंत तारे ॥ २ ॥ खाचते जुग सबं चलिया जावे ॥ खा
टा मीठा पर चलवावे ॥ ३ ॥ कहे तुकाराम रस जो
पीवे ॥ बहुरी फेरा वो कबहु न खावे ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ३९ ॥

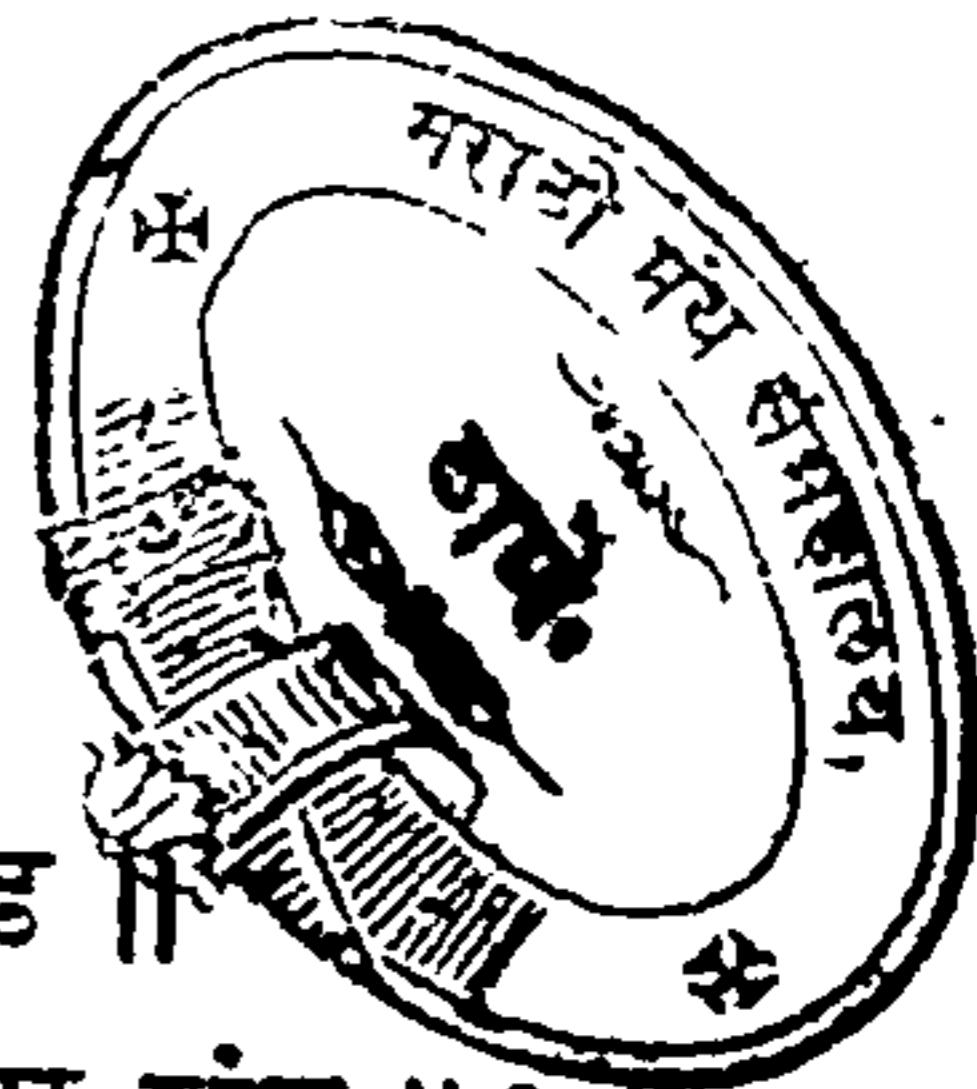
बार बार काहे मरत अभागी ॥ बहुरी मरणसे क्यातोरे
ओगी ॥ १ ॥ येहि तान करते क्याना होये ॥ भजन
भगति कर बैकुंठ जाये ॥ २ ॥ राम नामको न चहिये
कबरी ॥ वोहि सब माया छुरावन सगरी ॥ ३ ॥ कहे
तुकाराम न सुंभीर राखो ॥ राम रस जिव्हासे नित्त चा
खो ॥ ४ ॥

॥ अङ्ग ॥ ४० ॥

हे उदास तिष्ठको सुनाउं लोका ॥ रावन मार विभीष
ने दीई लंका ॥ १ ॥ गोवरधन न खपर गोकुल राखा ॥
बरसन लगा जब मेहु फत्तरका ॥ २ ॥ बैकुंठ नायक
काल कौंसासुरका ॥ दैत डुबाय सब मंगाय गोपीका ॥
॥ ३ ॥ स्तंभ फोडके पेट चिरा कशपुका ॥ प्रह्लादके
लिये कहे भायी तुका ॥ ४ ॥

दोहा प्रारंभ.

तुका बस्तर बिचारा क्या करे अंतर भगवान होय ॥
 भीतर मैला केवु मीठे मेरे ऊपर धोय ॥ १ ॥
 राम राम कहे मन आवरसु नहिं काज ॥
 बहुत उतारे पार आधे राख तुकाकी लाज ॥ २ ॥
 लोभीके चित्त धन वैठे कार्मीन चित्त काम ॥
 माताके चित्त पूत बैठे तुकाके सम राम ॥ ३ ॥
 तुका पंखी बहिर न मानु वोई जनावरु बाग ॥
 आसंतकु संत न मानु जै वर्मकू दाग ॥ ४ ॥
 तुकाराम बहुत मिठारे भर राखु शरीर ॥
 तनकी करुं नावरी उतारुं पैल तीर ॥ ५ ॥
 संत पन्हयासें खडा रहुं ठाकुरद्वार ॥
 चलत पाले हुं फीरो रज उडंत लेऊं सीर ॥ ६ ॥
 तुकाप्रभु बडो न मानो बडो जिसपास बहुदाम ॥
 बली हारी उस मुखकी जिस मुखमें राम ॥ ७ ॥
 राम कहे सो मुख भलारे बिन रामसें बिख ॥
 अब न जानो मते बेरोज काल लगावे सीक ॥ ८ ॥



राम कहे सो मुख भलारे खाये खीर खांड ॥
 हरिविन मुखमा धूल परीरे क्या जननि उस रांड ॥ ९१ ॥
 कहे तुका मे सबदा बेचुं लेवे केतन हार ॥
 मीठा साधु संत जनरे मुरुखके शिस मार ॥ ९० ॥
 तुका दास तीनकारे राम भजन निरास ॥
 क्या बिचारे पंडित करोरे जब पसारे हात ॥ ९१ ॥
 तुका जीत रामसुं तैसीं मिठी राख ॥
 पतंग जाय दीपं पररे करे तनकी खाक ॥ ९२ ॥
 कहे तुका जग भुलारे कस्ता न मानत कोय ॥
 हात परे जब कालके मारत फोरत डोय ॥ ९३ ॥
 तुका सुर नहीं सबदकारे जब कमाई न होय ॥
 चौटं साहे जब घनकीरे हिरा निवरे तोय ॥ ९४ ॥
 तुका सुर बहुत कब्हावे लडत बिरला कोय ॥
 एक पावे उंच पदवी एक खैसा होय ॥ ९५ ॥
 तुका मान्या पेटका और न जाने कोय ॥
 जपता कछु राम नाम हरी भक्तनकी सोय ॥ ९६ ॥

गजल प्रारंभ.

सीक्लैं ईसामे खूदा था मूजे मालुम नथा ॥ हकसे नहा
 क भय जूदा था मूजे मालुम न था ॥ १ ॥ सीक्लैं ॥
 वे वजुद हय तेरा कहेना नु आकबा। घरके कूरानमे लि
 खा था मूजे मालुम नथा ॥ २ ॥ दफतरे दिलपो न छा
 ई जगरे खूदीन चेद ॥ बदलीमे चांद छूपाथा मूजे मा
 लुम न था ॥ ३ ॥ सीक्लैं ॥ हकका मूजे तमाशा दो
 ज्यांहाका देख ॥ दर बदर मिसले गदाथा मूजे मालुम
 नथा ॥ ४ ॥ सीकले ॥

॥ गजल ॥ २ ॥

दीललगा यारसे वुसदिलका छूडाना मूसकीलु ॥ ईस्को
 का जखम लगा वुसका सीलाना मूशकीलु ॥ १ ॥
 हुश्म हय दामे बला जुलफा हैं दो काले नाग ॥ जीस्के
 तेनागोने डंसा वुसका जीलाना मूसकीलु ॥ दीलु ॥ २ ॥
 आतशे एष्कोने बहोतोका किया खाना खराब ॥ आ
 ग लगी दरयांवकु फीर वुस्का बूज्याना मूसकीलु ॥ ३ ॥
 दीलुलगा ॥ याद करनेकू लिया हातमे मनका मनका ॥

दीलु वुपर बोज्यापडा फीर मनका फीराना मूसकीलु ॥
 ॥ ४ ॥ दीलु ॥ ताफले नाढान हटिला मेरागम है प्यारे ॥
 मत्कबे इष्कने ताली दिलाना मूसकीलु ॥ ५ ॥ दीलु ॥
 जो उमरयादमे गुजरी सो गनीमत समजो ॥ सो गई
 आएषमे वुसकाजगाना मूसकीलु ॥ ६ ॥ दीलु ॥ रोजे
 मखपीये बली जाहेर न किसुंसे करना ॥ मुमेसे बात ग
 ई फीर वुसका फीराना मुसकीलु ॥ ७ ॥ दीलुलगा ॥
 ॥ गजल ॥ ३ ॥

क्या गफलतमे सोई रहा जीती बाजी तै हारी ॥ हो जी
 व केता जीवना देखो दीलमे विचारी ॥ १ ॥ तै कोन
 तेरा हल किया सो तो खबर न कीया ॥ खुप उमर आ
 दम जैसी तैने भेने केव दिना ॥ हो० ॥ २ ॥ आदी उम
 र गई नीदंमे कछु बाल पन खोई ॥ कछु दुनियाकी
 जोकमे तेरी आकलबी गई ॥ हो० ॥ ३ ॥ कहे क
 बीर ये राहासे कवडी बदले गमाई ॥ बेर बेर आवसर
 नही मीले बडे भाग पाई ॥ ४ ॥

॥ गजल ॥ ४ ॥

ज्या घट ग्यान प्रगासीया सो छपे न जाई ॥ तनमे

मनमे नयनमे नीज वस्तु आई ॥ १ ॥ तन देखही हंस व
ना मन चंचल नही ॥ एक टक नयन लागा रहे गुरु
चरना माही ॥ ज्याघ ० ॥ २ ॥ द्रीग सत्त बदन खुसिया
लमे बोले मधुरी बानी ॥ सत्त सबद भाके सदा ऐसे निर
मल ग्यानी ॥ ज्या ० ॥ ३ ॥ सतमे कहे सतमे रहे सत्त
सबद उच्चारा ॥ पाच पचीस और तीनसे रहे आपही
न्यारा ॥ रहे सरोदे सब्दमे प्रेम हीत कारी ॥ कहे कबीर
वो दासकी सोभा बल हारी ॥ ४ ॥

॥ गजल ॥ ५ ॥

चेतरे नर वावरे केव आचेत रहाई ॥ काल दंगा सीर उ
पर सवकु धर खाई ॥ १ ॥ लाख जीव नीत खात है
सवा लाख उपाई ॥ काङ्कु छोडे नही ऐसो काल
अन्याई ॥ च० ॥ २ ॥ जगत चबीना कालका सब
खात चुगाई ॥ कठन काल मुख सब परे खाता न आ
घाई ॥ ३ ॥ कुल मर जादा छांडके कर संत सगाई ॥ कहे
कबीर तब बचे हो काल दगा मीट जाई ॥ च० ॥ ४ ॥

॥ गजल ॥ ६ ॥

मै ठाड़ी दरगाहाका मेरी सुनीयो पाई ॥ एक नाम नी

ज अलगु दुजोथीर न रहाई ॥ १ ॥ पैले पहीरे पुका
रिया सबसुनके सोता ॥ सोता नर नहीं जागिया सोये
जन्म विगुता ॥ मै० ॥ २ ॥ दुजे पहीरे चेताईया मद ग
लती माही ॥ सोई सवागन सुंदरी मेरीसे जा साई ॥
॥ मै० ॥ ३ ॥ तीजे पहीरे प्रगासीया पीया रंग राती ॥
सोई सवागन सुंदरी जोबन मदमाती ॥ मै० ॥ ४ ॥ चौ
थे पहीरे बंदगी कोई बंदा जागे ॥ कहे कवीर बो दास
से सदा जन्म भागे ॥ मै० ॥ ५ ॥

॥ गजल ॥ ६ ॥

बाजी गरबाजी रची बाजी बीसतारा ॥ बाजीसे बाजी
रमे बाजी गर न्यारा ॥ १ ॥ काम क्रोध अहंकार
का ले डमरु बजाया ॥ जल थल माही जीवता बाजी
ये भरमाया ॥ २ ॥ अहं बास ममता चढ़ी नव ढोर पसा
री ॥ मोह ढोल बाजे सदा खेले नर नारी ॥ बा० ॥ ३ ॥
सुख दुःख गोटा उछले माया मद चीना ॥ ब्रह्मा विष्णु
महेसकु बाजी ये सब कीना ॥ ४ ॥ चंचलतासो निश्वल की
या नीरभय घर आया ॥ कहे कवीर जीने बाजी तजी
न बाजीगर पाया ॥ बाजी गर० ॥ ५ ॥

॥ गज्जल ॥ ७ ॥

मकदुर नहीं वुसकी तजली के बयांका ॥ जीवुं समये शरा
पा हो अगर शरफ जुबांका ॥ मकदुर नहीं उसकी ॥ १ ॥
परदेकु ताइवुंन के दरे दिलसे उठा दिये ॥ खुलता है
अबी पल्लमें तलेशमात जेहांका ॥ मकदुर ॥ २ ॥
इश गुलशने हशतीमें अजब दीद है लेकीन ॥ जब चश
म खुली गुलकी तो मोशंम है खेजांका ॥ मकदुर ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ शोदा जो कभु गोश से हीमत की सुने तूँ ॥ मज
मुन येही हय जरश दिलके फेगांका ॥ मकदुर ॥ ४ ॥
हसती से आदंम तक नफसे चंदकी श्य राह ॥ दुनीयासे
गुजरना शफर ऐसा है कांहांका ॥ मकदुर ॥ ५ ॥

॥ गज्जल ॥ ९ ॥

वे कांहा जीते रहे जो बेवफाई करगये ॥ मर गये आ
खर न कीसे आशनाई कर गये ॥ वे कांहा ॥ १ ॥
उमर बेपाईया पे अपनी इश कदर नां जांनहो ॥
मरगने उनकु न लोरा जो खोदाई कर गये ॥ वे
कांहा ॥ २ ॥ आरशीमे अकश अपनां देख कर
लाये गरुर ॥ चार दीनकी जीनगीमे खुद नुमाई कर ग

ये ॥ वे कांहा० ॥ ३ ॥ येबजोइ करके अकसर वे जो
बसते थे केसे ॥ हातसे अपने वे अपनी जग हसाइ
कर गये ॥ वे कांहा० ॥ ४ ॥ रेह गया ओ शाफो अ
जीयत आखर दोनो गये ॥ जो भलाई कर गये और
जो बुराई कर गये ॥ वे कांहा० ॥ ५ ॥

॥ गजल ॥ १० ॥

शदकेमे तेरे जुलफोंके हर तार तारके ॥ दस तरे गुले
अनार कबा बुट्ठी दारके ॥ शदकेमे तेरे जुलफोंके ॥ १ ॥
बुलबुलने वकते केद के रो रो के येवुं कहा ॥ शइयाद
वासते मेरे परवर दिगारके ॥ शदकेमे तेरे० ॥ २ ॥ वे
चोगे तो सही पर इतनाभी किजीयो ॥ दीजोवे हातो
हात कीशी नो बाहारके ॥ शदकेमे तेरे० ॥ ३ ॥ दरीया
तु चल शेताबी मै मंनजल करारहुं ॥ हंम जाने हारे
दुरके कंई आर पारके ॥ शदकेमे तेरे० ॥ ४ ॥ ए वतंन हय
हमारा तुंम पुछतेओ केया ॥ हंम रेहने वाले हय बुसी
बागो बहारके ॥ शदकेमे तेरे० ॥ ५ ॥ “अफशुन” तुं शाद
रहीयो जमाना करेगाक्या ॥ हंम है गुलाम उंस शहे
दुलदुल सबारके ॥ शदकेमे तेरे० ॥ ६ ॥

॥ गजल ॥ ११ ॥

गर हंमने दील सनंमकु दीया फीर कीसीकु क्या ॥ इस
लांम छोर कुफर लिया फीर कीसीकु क्या ॥ गर हंमने
दील सनंम ॥ १ ॥ हमने तो आपनां आप गीरबांन
कीया हय चाक ॥ आपही सीया सीया न सीयाफीर
फीर कीसीकु क्या ॥ गर हमने० ॥ २ ॥ आंखे तुंमारी
लाल सनंम कूच नीशां पीया ॥ आपही पीया पीया
न पीया फीर कीसीकु क्या ॥ गर हमने० ॥ ३ ॥ अप
नी तो जीनदगी मीयां मीसले हुबाब हय॥गोखेजर ला
ख बरस जीया फीर कीसीकु क्या ॥ गर हमने० ॥ ४॥
दुनीयांमें हंमने आके भला या बुरा “ नशीम ” ॥ जो
कुच कीया सो हंमने कीया फीर कीसीकु क्या ॥ गर
हंमने० ॥ ५ ॥

॥ गजल ॥ १२ ॥

सात परदेमे लुपे वुहांशेबी लावुं तुजे ॥ लाके फीर च
शमोके परदेमे लुपावुं तुजे ॥ सात परदेमे लुपे ॥ १ ॥
गर तुलु होवे तुं अफलाकपर है माहे मुनीर ॥ मै देखु
जुलवे नुमां बाद दीखावुं तुजे ॥ सात पर० ॥ २ ॥ गर

शनम दरमे तुं पोशीदा रहेगा हमसे ॥ दामे बुलफत्की
जगा जोलमे लावुं तुजे ॥ सात पर० ॥ ३ ॥ तु न इवुं
जान के ये मुजसे जुदा होवेगा ॥ मीशले शाये के च
लु सात चलावुं तुजे ॥ सात पर० ॥ ४ ॥ बेकरारीसे
शमापर जो जले परवानां ॥ तु जो परवानां करे सात
जलावुं तुजे ॥ सात पर० ॥ ५ ॥

॥ गजल ॥ १३ ॥

बेकली बागमे माली कबु ऐशीतो न थी ॥ खाली हर
फुलोसे दाली कबु ऐशीतो न थी ॥ बेकली० ॥ १
कंद लपक जो मीठाईने दिखाया है अशर ॥ मुंमे सीरी
तेरे गाली कबु ऐशीतो न थी ॥ बेकली० ॥ २ ॥
खंमे हर जखमसे मेहराबकी सुरत है आया ॥ तेग का
तीलकी हीलाली कबु ऐशीतो न थी ॥ बेकली० ॥ ३ ॥
देखकर आशकोंका नाखमे दंम आता है ॥ बालीसे उ
मरमे बाली कबु ऐशीतो न थी ॥ बेकली० ॥ ४ ॥
सुनते है शाकीये मय कशका दिवाला नीकला ॥ बोतली
इश बजममे खाली कबु ऐशीतो न थी ॥ बेकली० ॥ ५ ॥
कीस परी जातने सिसेमे उतारा हय परी ॥ बात तेरी ए

नीराली कबु ऐशी तो न थी ॥ बेकली० ॥ ६ ॥
 खुन किसका कीया तुने शीतंम ए जात बता ॥ आशो
 मां मोपे ये लाली कबु ऐशीतो न थी ॥ बेकली० ॥ ७ ॥
 खुब मुशाकु दिया काबे दुनीयांन फरेब ॥ ओउसे चा
 हानेवाली कबु ऐशीतो न थी ॥ बेकली० ॥ ८ ॥

॥ गजल ॥ १४ ॥

गुजरके तनसे हर येक दंम गया सो फीर नां फीरा ॥ व
 तनकु छोरके हाकंम गया सो फीर ना फीरा ॥ गुज
 रके तनसे हर येक दंम गया० ॥ ९ ॥

दोहा—आवन आवन कहे गये और लग
 गये बरस पचास ॥ तंनका दुवा पीज
 रा और अवतक गइ न आस ॥

अमल बेठानेकु नांजंम गया सो फीर नां फीरा ॥ धु००
 दुवा हय नांम नीशां जगमे इनसांनका ॥ जहांनसे आद
 म गया सो फीर नां फीरा ॥ गुजरके० ॥ २ ॥

दोहा—झरी लगी बरसातसे और चोमासा
 दीन आये ॥ बादल गरजे धुंमसे ओ
 बीजली चमक बताये ॥

हमारे होशनका आलम गया सो फीर नां फीरा ॥ धु० ॥
 हुइ हय हक्कके तरफ जीसके तंडि तलब यारो ॥ हमारे
 पेहलुसे हंमदंम गया सो फीर नां फीरा ॥ गुजरके० ॥ ३ ॥
 दोहा—पंनची पोंहोंचा देस तुं, ओर हमे दीया परदेस ॥

राखलगावुं सीर पांवुकु, ओर लेवुं जोगनका बेस॥
 बराये जंग के मो हकंम गया सो फीर नां फीरा ॥ धु० ॥ स
 करसे आने लगे सब मुशाफेर अपने घर ॥ हमारे रेआश
 का मेहेरम गया सो फीर नां फीरा ॥ गुजरके० ॥ ४ ॥
 दोहा—दुनीया हय दो रोजकी, इसपर न कर गुमाना ॥ सो
 बरस या साथ जी, आवे मोहत नीधान ॥

फत्ताके किलेपर हासम गया सो फीर नां फीरा ॥ धु० ॥
 रहा है नाम शीकंनदरसे बाहादशा ना रहे ॥ जांहान
 कांनीसे खा गंम गया सो फीर नां फीरा ॥ गुज० ॥ ५ ॥
 दोहा—फत्तेकी तलवार थी, मुलको परथा नाम ॥ तेग
 कजाकी आ लगी, तो कोइ ना आया काम ॥
 उधरकु जाके जो कोइ रंम गया सो फीर नां फीरां ॥ धु० ॥
 पेहेलवानोकी लशकरमें थी जरब जीसकी ॥ कजाके

મોહોરેપર રુસતંમ ગયા સો ફીર નાં ફીરા॥ગુરજરકે.૦॥૬॥
દોહા—મરદોકી મરદી રહે, ઓર સખીયોકી ખેરાત ॥

ઇસ દુનીયાસે જો ગયે, ખાલી વુનકાં હાત ॥
બ્રશકર બાગપર શવનમ ગયા સો ફીર નાં ફીરા॥ધ્રુ.૦॥
કીયા હય જીસને સખાવતકે નાંમકુ રોશન ॥ ફનાંકે
મુલકપર સોહરાબ ગયા સો ફીર નાં ફીરા॥ગુજરકે.૦॥૭॥
દોહા—ગાડી ઉપર બેઠકે, જો કરતેથે ઇનસાફ ॥ ચીઠી
આઇ સરકારસે, તો ઘરી કરે નાં માંફ ॥

જગાકુ છોડકર અનજમ ગયા સો ફીર નાં ફીરા॥ધ્રુ.૦॥
બડી રેયાશત જમશોદકી થી દુનીયાંમે ॥ જાંહાંનસે કર
ંક વો માહતંમ ગયા સો ફીર નાં ફીરા॥ ગુજરકે.૦॥૮॥
દોહા—દુનીયાંતો દો રંગહય, કીસકે સંગ નાં આયે॥કીસે
મિલાવે ધુલમે, ઔર કીસકુ ચમન દીખાયે ॥
સાંસે હોકે જો બહરંમ ગયા સો ફીર નાં ફીરા॥ધ્રુ.૦॥ખે
જા બાહરતો સબકુ લગી હૈ અજમત ॥ વલે જવાંનીકા
મોહોસમ ગયા સો ફીર નાં ફીરા॥ ગુજરકે.૦॥૯॥

॥ ગજલ ॥ ૧૫ ॥

અદમકે શેરકુ જો દંમ ગયા સો ફીર નાં ફીરા ॥ જારી

इन चरमोसे जो नंम गया सो फीर नां फीरा ॥ आद
मके शेरकु जो ॥ १ ॥ लढाई करते हैं चेहेरेपर दोनों
जुलफे रीया ॥ गुले रुखशारका मोसंम गया सो फीर
नां फीरा ॥ आदमके ० ॥ २ ॥ आजब हय मनजील मु
स्तरपे मुजकु हैरत है ॥ जांहांसे जो कोइ हंमदमं गया
सो फीर नां फीरा ॥ आदमके ० ॥ ३ ॥ खुदाकी बात
खुदा जाने येतो बंडा क्याजाने ॥ अजब हवा हय के
ओ दंम गया सो फीर नां फीरा ॥ आदमके ० ॥ ४ ॥ अहे
लेमां अहेलेमां कीया तु लिखता दिवाँनें ॥ नगरमे रांमके
जो राम गया सो फीर नांफीरा ॥ आदमके ० ॥ ५ ॥
उदास होके सनंम सबोहोकु चला आफसोस ॥ बा
हार रोनके शबनम गया सो फीर नां फीरा ॥ आद
मके ० ॥ ६ ॥ गरुरी मत करे तुज हुशनेपे आये माहे
लेका ॥ अजलके सामने रुशतंम गया सो फीर नां
फीरा ॥ आदमके ० ॥ ७ ॥

॥ गजल ॥ १८ ॥

गुलके बनाने वाले गुलपर खेजां कीवु लाया ॥ गुलकु
तईयार करके उस बागसे छोराया ॥ गुलके बनाने वा

ले ॥ १ ॥ जां बोशतांके अंदर येक गुल कीया है रोशन ॥ उस रोशनीके अंदर बुलबुलकु ला बेठाया ॥ गुल के ॥ २ ॥ मालीसे जाके कहीयो काची कली न तोरो ॥ वायेदाकु क्या करूँ मै खालेकने येवु बनायां ॥ गुलके ॥ ३ ॥ बुलबुलने जाके पुछा रो रो के बांगबांसे ॥ शखतीसे इस कदर तुं फीर गुलकु केवु दुखाया ॥ गुलके ॥ ४ ॥

होरी प्रारंभ.

ये मन निपट अरानी ॥ होरी खेलन जाने ॥ ध्रु ० ॥
 काम क्रोध आवर लोभ मोहकी ॥ सिरपर घागर भारी ॥ हो ० ॥ १ ॥ या नगरीमो पाच मवासी ॥ आवर पचिसा नारी ॥ हो ० ॥ २ ॥ ईन मारो होरी खेलो पीया संग ॥ बात सुदर जाये सारी ॥ हो ० ॥ ३ ॥ सरिव सयेली होरी खेले ॥ हात सुमत पीचकारी ॥ हो ० ॥ ४ ॥
 कहत कबीरा सुनो भाई साधो ॥ सतगुरु चरन रहोरी ॥
 होरी ० ॥ ५ ॥

॥ होरी ॥ २ ॥

गगन मंडल उर ज्ञानी ॥ नीति फाग मचो हय ॥ ध्रुव ॥ अथा
 न गुलाल अर्बार आरगजा ॥ सखिया लेले धाई ॥
 उमग उमग रंग डारो पियापर ॥ फगवा देवो बुलाई ॥
 नी० ॥ १ ॥ फगवा नाम मिले मोहे सतगुरु ॥ तनकी
 तपत बुझाई ॥ सधद ढोर ज्याहा अघ उडत हय ॥ सोभा
 बरनी न जाई ॥ नी० ॥ २ ॥ गगन मंडलमे होरी रची
 कोई ॥ गुरु गम झलक पाई ॥ कहे कर्बार मगन भई
 विरहन ॥ अवा गवन न सोई ॥ नीति फागमचोहै ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ ३ ॥

अपने पिया संग होरी मै खेलु ॥ समत सखी संग लाई
 ॥ ध्रुव ॥ खेलु मै होरी आंगन मोरी ॥ तन मन सुरत ल
 गाई ॥ पीतम पास आस भई पूरन ॥ राखु मै हि
 रदे लगाई ॥ स० ॥ १ ॥ दुबद्धा दुरमत दुर परानी ॥ जब
 देखो निरताई ॥ बरसत रंग अंग भये सीतल ॥ त
 नकी तपत बुझाई ॥ स० ॥ २ ॥ अजर अखंड आनाम
 अभय पद ॥ कोन सके गुन गाई ॥ गुन निरगुन
 गुन राखो गुरु गम ॥ पीतम पिया जब पाई ॥ स० ॥

॥ ३ ॥ पीतम पास सेज सुख बिलसें ॥ सुख वरनी न
जाई ॥ धरमदास देसी होरी खेले ॥ सब संसय मीट
जाई ॥ स० ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

॥ होरी ॥ ४ ॥

कोई मोपे रंग न डारो ॥ मैतो भई हुं बावरी ॥ धु० ॥
एक बावरी दुजी बीरहेकी मारी ॥ तीजो नेहे लगायो ॥
पाच सखी मील होरी खेले ॥ आवर सवागन नारी ॥
मै० ॥ १ ॥ आपने पिधा संग होरी मै खेलु ॥ येही
बंसत येही फागरी ॥ कहे कर्वीर सुनो भाई साधो ॥
आवागवन निवारी ॥ मैतो भई० ॥ ४ ॥

॥ होरी ॥ ५ ॥

खेले मनोहार होरी ॥ होरी खेलन हारा ॥ धु० ॥ घर
घर जानत कोई जानन हारा ॥ आपही आप जगत उ
जीयारा ॥ हो० ॥ १ ॥ आपही गावे आप बजावे ॥ आ
पही रंग आपपे डारा ॥ होरी० ॥ २ ॥ मानपुरी प्रभुकी छब
नीरखत ॥ मगन भई भुला दुःख सारा ॥ होरी० ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ ६ ॥

हरी मै मंगला गाउ ॥ शाम सुंदरकु रिझाउ ॥ धु० ॥ पी

तम प्यारे मोरे घेर आये ॥ फुलन सेज बिछ्यांडं ॥ शा० ॥
 ॥ १ ॥ प्रेम सरोवर नित नित न्हाउ ॥ मान गुमान भ
 गाउं ॥ शा० ॥ २ ॥ मानपुरी प्रभुसो हिलमिलके ॥
 चुपकी बात सुनाउ ॥ शाम सुंदरकु० ॥ ३ ॥
 ॥ होरी ॥ ७ ॥

गावे सारंग कान्हा ॥ सुनी सुनी धुनी मन माना ॥ ध्रु० ॥
 मोहन लालने मोहनी डारी ॥ सब संसार भुलाना ॥
 सुनी० ॥ १ ॥ मगन भये बिद्रावन बासी ॥ मदन मनो
 हार जाना ॥ सुनी० ॥ २ ॥ मानपुरी प्रभु शामसुंदरपर ॥
 वारो तन मन प्राना ॥ सुनी० ॥ ३ ॥
 ॥ होरी ॥ ८ ॥

कछु सबदा नही कीना ॥ केउं आये केउं चले ॥ ध्रु० ॥
 काहासे तुम हाटे आये ॥ दीसत हो तुम भले ॥ केव० ॥
 ॥ १ ॥ हरिकी भक्ती न गुरुकी सेवा ॥ काम क्रोध फल
 फले ॥ केव० ॥ २ ॥ कहत मानपुरी समजो लोगो ॥
 कीस कारण तुम चले ॥ केव० ॥ ३ ॥
 ॥ होरी ॥ ९ ॥

केत्ता समजाउं ॥ समजे नाम न मेरा ॥ ध्रु० ॥ बार बार

इ काहालग सिकाउं ॥ मानत नाही चिढोरा ॥ स० ॥
 ॥ १ ॥ कहो करे नही आपबिच्यारे ॥ भागत फिरत
 भगोरा ॥ स० ॥ २ ॥ कहत मानपुरी गुरुमुख होना ॥
 तब मन होवे तेरा ॥ समजे नाम न मेरा ॥ केता० ॥ ३ ॥
 ॥ होरी ॥ १० ॥

घर घर नाच नचावे ॥ ये यहस्ती पेट ॥ ध्रु० ॥ जे नर
 पेटके कारन गावे ॥ नाही ब्रह्मसो भेट ॥ घर० ॥ १ ॥
 सब घट एक ब्रह्म ही ज्याने ॥ ओ नर कसबी थेट ॥
 घ० ॥ २ ॥ मानपुरी नीक्राम होयके ॥ गुरु चरन पर
 लेट ॥ घरघ० ॥ ३ ॥
 ॥ होरी ॥ ११ ॥

रसना मेरो कहो करोरे ॥ निस दिन हरी रस चाख ॥
 ध्रु० ॥ थोरे दिननके जीयने कारन ॥ झुट न भरिये सा
 ख ॥ रस० ॥ १ ॥ जोदिन जाय सो फेर न आवे ॥ पल
 पल हरि गुन भाक ॥ २ ॥ कहेत मानपुरी हरिके भज
 न बीन ॥ अंत खाककी खाक ॥ रसना मेरा कहो करोरे ॥
 निसदी० ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १२ ॥

सरन आयेकी लाज तुमको ॥ धृ० ॥ कामी क्रोधी प
तीत उधारन ॥ कीनो सबके काज ॥ तु० ॥ १ ॥ दिना
नाथ अनाथके स्वामी ॥ भक्त वत्सल महाराज तु० ॥
॥ २ ॥ मानपुरी गुन काहालग गावे ॥ साचे गरिब न
वाज ॥ तुमको शरन आयेकी० ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १३ ॥

गाव सजनका दूर ॥ गुरुजी बाट बतावो ॥ धृ० ॥
किस मारग मेरो पीतम मिलियें ॥ नैन न देखो नूर ॥
॥ गुर० ॥ १ ॥ सब कोई कहत गुरुजीसे पुछो ॥ साहे
ब हाल हजुर ॥ गुरुजी० ॥ २ ॥ मानपुरी हरी घटमो कै
सो ॥ अलख रस्या भरपुर ॥ गुरुजी० ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १४ ॥

भरदे पीतम प्याला ॥ मेरो मन होवे मतवाला ॥ धृ० ॥
ये मन चंचल थीर न होवे ॥ जप देखी जप माला ॥
॥ मेरो० ॥ १ ॥ मन पन जायन मनको तबई ॥ जबल
ग पावे कला ॥ मेरो० ॥ २ ॥ मानपुरी सतगुरु परसादे ॥
तन मन भयो खुशाला ॥ मेरो मन० ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १५ ॥

वारी वारी वारी पीया पीतम प्यारे ॥ धृ० ॥ छुंतो मगन
भई दरसनसो ॥ मन हर लीनो मनोहर मेरो ॥ वा० ॥
॥ १ ॥ छुटी भव बंधन सो मै ॥ पीया मेरो मैं पीयाकी
दासी ॥ वा० ॥ २ ॥ मान पुरी पिया पलख न भुले ॥
लगन लगी चरननसो ॥ वारी० ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १६ ॥

भुला मन कोई समजावो ॥ आवोरे आवो ॥ धृ० ॥
जो कोई मेरो मन समजावें ॥ ये मन ताहे चढावो ॥
॥ १ ॥ और बात मोहे भावत नाही ॥ चुपकी बात सु
नावो ॥ २ ॥ मान पुरी कहे आलख नगरको ॥ सुधो
पंथ बतावो ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १७ ॥

रीझो और रिझवो ॥ हरिके गुन गावो ॥ धृ० ॥ येक छो
डी जीन दुज्या ध्यावो ॥ घट घट आलख जगावो ॥
॥ गु० ॥ १ ॥ करो भक्ति और प्रेम बढावो ॥ बहुरी
जनन नही आवो ॥ ह० ॥ २ ॥ कहेत मानपुरी तो तुम
पावो ॥ गुरु चरनन चित्त लावो ॥ गु० ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १८ ॥

पार पायो नहीं पार ॥ मनवा ॥ धृ० ॥ पुख धुँडा वारी
पछम धुँडा ॥ धुँडा जग संसार ॥ पा० ॥ १ ॥ पीयां
सो भेट भई नहीं कबहू ॥ झुटा सब सिनगार ॥ पा०
॥ २ ॥ मान पुरी साई हरि घट माही ॥ भटकत फिरत
गव्हार ॥ पार पायो ॥ ३ ॥

॥ होरी ॥ १९ ॥

जापत रहना बे ॥ सब सुख पुरन धाम ॥ धृ० ॥ साधु
की संगत गुरुजीकी सेवा ॥ पावत अविचल धाम ॥ १ ॥
जब चाहे तु मन मेरा है ॥ मन मन मोशा राम ॥ २ ॥
गुरु साहेबजी निश्वल सिरपर ॥ जांहा तहां मेरा राम ॥
॥ ३ ॥ दास गोपाला करत हय बिनंती ॥ सब मिल येक
हीधाम ॥ ४ ॥

॥ होरी ॥ २० ॥

जन्नतमे खडे हैं रसुल ॥ माई उरते फुवारे नविके नुर
के ॥ जन्नतमे ॥ धृ० ॥ हुर परिया फागन मांगे ॥ उम
द मांगे रसुल ॥ माई उरते फुवारे ॥ १ ॥ लाहीलाका
कोट बनाया ॥ बिस्मीला भरपूर ॥ माई उरते फुवारे ॥

॥ २ ॥ गौज कूतब मिले खेलत होरी ॥ सबमे सरस है
रसुल ॥ माई उरते फुवारे ॥ ३ ॥
॥ होरी ॥ २१ ॥

होरी या रंग धुम मच्याउं ॥ जब मोहन पाउं ॥ धृ० ॥
आविर गूलालके उरते फुवारे रब्बको रथ जिगाउं ॥ द
स दृग पाल रहे चक्रमीजेत ॥ ओही ईद्र पूरी भरमा
उ ॥ सुरनके सीस नमाउं ॥ होरीया रंग धुममच्याउं ॥
॥ १ ॥ बाजत ताल मृदंग इयांज डफ लेकर बीन ब
ज्याउं ॥ राग धमाहा आलाफ गायके ॥ ओही ब्रंस्ता
के बेद बूलाउं ॥ गजानन नाचत चाउं ॥ होरी० ॥ २ ॥
सूर नर मूनी ज्याको ध्यान धरतहैं ॥ तीनोको रंग मि
लाउं ॥ सूर स्याम संगे होरी खेलके ॥ ओही भूले
बकसाउं ॥ चरणपर सीस नमाउं ॥ होरी यारंग ॥ ३ ॥
॥ होरी ॥ २२ ॥

ब्रीजमे हरी होरी मच्याई ॥ मच्याई ॥ ब्रीजमे हरी होरी
मच्याई ॥ धृ० ॥ इतते आई सूघर राधिका ॥ उत्तते कूवर
कनाई ॥ हील मिल फाग परस्परे खेले ॥ या छबी ब
रनीन ज्याई ॥ नंद घर बजत बधाई ॥ ब्रीजमे ॥ १ ॥

राधासे न दियो सखी एनंते ॥ झुंड झुंड ऊठ धाई ॥ ल
 पटी झपटी पकरयो स्यामसुंदर ॥ के इन मेरा चोर श्वा
 हाई ॥ बहु दधी माखन खाई ॥ २ ॥ ब्री० ॥ छीन
 लीई करसे कर मूरली ॥ सीरपर चूंधरी ओढाई ॥
 बेंदी भाल नैन बीच काजर ॥ नाक बेसर पेहराई ॥ म
 नु नही नार बनाई ॥ ब्री० ॥ ३ ॥ शुस्कत हथ मूख मोर
 मोरके ॥ कहा गई चतूराई ॥ कहा गंये तेरे नंद बावा
 जी ॥ कहा जसोमत माई ॥ लाल केउ नही लेत छूडा
 ई ॥ ब्रीजमे ॥ ४ ॥ लेले हात कनक पिचकारी ॥ ॥
 बरवस मूखपर चलाई ॥ बरसत रंग आंग सब भीजे ॥
 जूग जूग चंचर गाई परस्परे लाग लगाई ॥ ब्रीजमे ॥ ५ ॥
 फगवारे मांगत चंचर गावत ॥ बीदित बने जदुराई ॥ रा
 धे शाम जूगल देउ जोडी ॥ सुरदास बलज्याई ॥ प्रीत
 कछु बरनी न ज्याई ॥ ब्रीजमे० ॥ ६ ॥
 ॥ होरी ॥ २३ ॥

झटक्यो मारो चीर मूरारी ॥ मुरारी झटक्यो मारो ची
 र मूरारी ॥ ध्रु० ॥ घागर रंग सीससे पटकी मूरगई बेस
 र सारी ॥ रेसमी बंद आंगीयाके तुटे ॥ झरगई सालू

किनारी ॥ मिला मोहे आनूप खिलारी ॥ झटक्यो ० ॥
 ॥ १ ॥ सुनो हो सहेली सुनो हो पडोसन ॥ बीनंती करु
 कर जोरी ॥ ऐसी सीख दिई कूबज्याने ॥ मानत नहीं
 गिरधारी ॥ ब्रीजको बसवो बुरोरी ॥ झटक्यो ० ॥ २ ॥
 लेकर चीर कदम चढ़वैठ हम जलमो जो उघारी ॥
 संगकी सहेली दुर निकस गई ॥ मो सीर घागर भारी ॥
 आरज मारो मानो बनवारी ॥ झटक्यो ० ॥ ३ ॥ बी
 गर गई मेरी सीरकी चूंदरया ॥ सास सूने देईगी गारी ॥
 चंद्रसखी और डर पीयाको कहा कहु उपसारी ॥ जी
 बनको ये धीर कारी ॥ झटक्यो ० ॥ ४ ॥

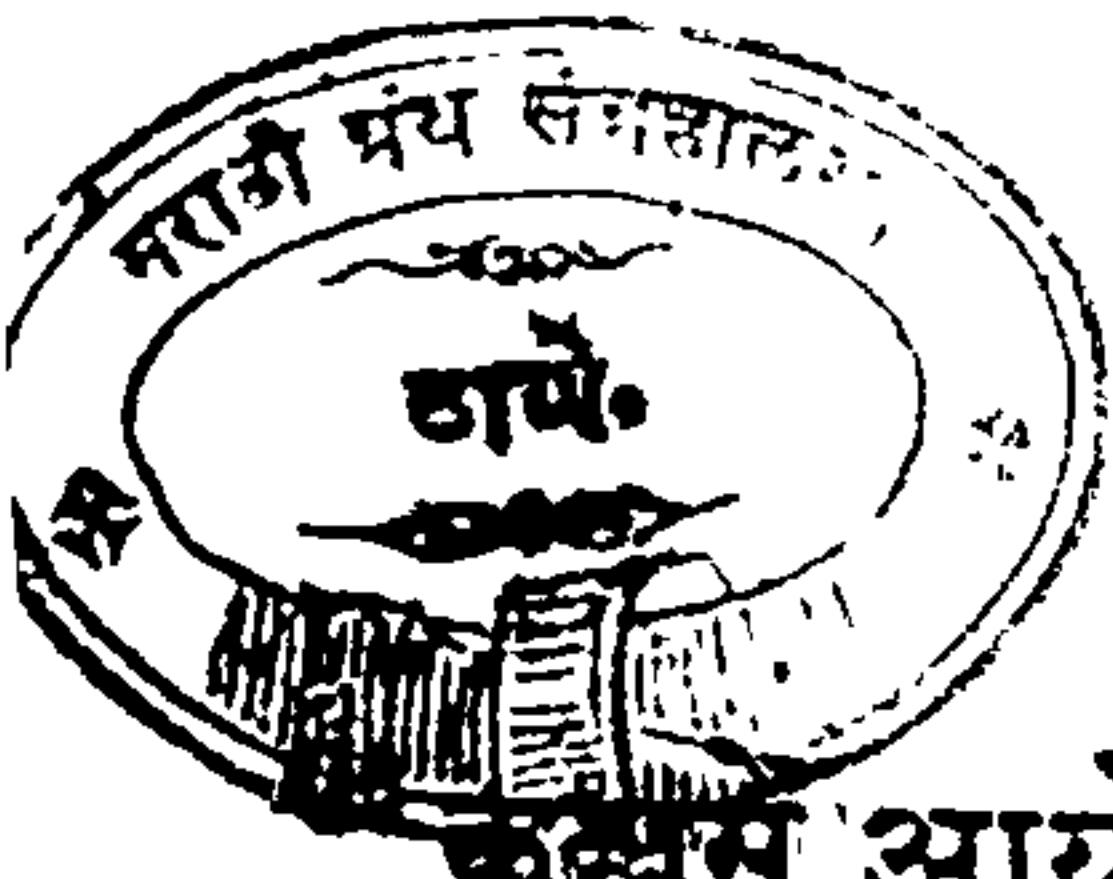
॥ होरी ॥ २४ ॥

शामरेसे ज्या कहीयो मोरी ॥ मोरीरे शामरेसे ज्या ॥
 ॥ धु ० ॥ सीस नमाई चरण गही लिन्हो ॥ बिनंती करु
 कर जोरी ॥ ऐसी चुक कहा परी मोसे ॥ प्रीत पाढ़ली
 तोरी ॥ सूध नव लीन्ही मोरी ॥ शामरेसे ॥ १ ॥ भूसन
 बसन सबी हम त्यागन ॥ खान पान बीसरोरी ॥ बजू
 त रमाई जोगन हो वैठी ॥ सोते रही ध्यान धरोरी ॥
 बेग केउ नहीं आवे कीसोरी ॥ शामरेसे ० ॥ २ ॥ रोम

रोम बीख छाई रहो हैं ॥ मधमे बैर परोरी ॥ बाली क
लेज्या जलाई दीयो है ॥ तन मन ज्यात जरोरी ॥ धीर
ज नहीं ज्यांत जरोरी ॥ शामरेसें ॥ ३ ॥ निसी दीन
ब्याकुल फीरेही राधीका ॥ ब्रीहे व्यथा तन्न घेरी ॥
शाम तुल्मे मैं धूंडत कुंजनमे ॥ सीस लटा गई छुटी ॥
शाम संगे खेलुगी होरी ॥ शामरेसें ॥ ४ ॥ सुरदास
आबलाकी बिनंती ॥ अवतो आस रही थोरी ॥ प्रान
दान दीजे रघु नंदन ॥ गाउमै कीर्ती तोरी ॥ बींद्रावन
हो रही होरी ॥ शामरेसें ॥ ५ ॥

॥ होरी ॥ २५ ॥

सावरो आजहु नहीं आयो ॥ बावरो आजहू नहीं आ
यो ॥ द्रीग नझर नाझर लायो ॥ सावरो ॥ धु ॥ ब्री
ज जूगतनको संग छाँडके मधूबन जाय बसायो ॥ दा
सिकी पटराणि कीन्ही ॥ गोपीनाथके नाम लिज्यायो ॥
कंथ कुबजासें कहायो ॥ सावरो ॥ १ ॥ लीख लीख
पतिया छतिया जलावे ॥ उद्धवजी बस्ती पठायो ॥ क
हा कहु मेरे मीत्र विसवासी ॥ दासीसे स्मेह लगायो जे
हर ले घोरी पिलायो ॥ सावरो ॥ २ ॥ कुर आकुर



सूरदास आयो घर घर होरी जगायो ॥ एक होरी मोरे
जरती हियामो ॥ सपनोमे सूख न पायो ॥ फेरकर फा
गन आयो ॥ सावरो ॥ ३ ॥ बीध विधाता अती सं
तापके कामके जोर बंधायो ॥ सूरदास आबलाकि बिनं
ती ॥ करत मन केउ भायो ॥ जले पर लवन लगायो ॥
॥ सावरो ॥ ४ ॥

॥ तेलगु पद ॥

ज्ञानी मरगु सूझानुलाकु एरका ॥ ज्ञानी ॥ १ ॥
बंदा रोच तीपु न्यालूकाकु एरका ॥
आंदूला तीर्गे तेहु येम यरगु ॥ ज्ञानी ॥ २ ॥
आउ पालु तीपु ल्यागालूकु एरका ॥
पोदगू साटुना बुन्ना पीडदु येम यरगु ॥ ज्ञानी ॥ ३ ॥
मंची नीलु तीपू मच्छालूकु एरका ॥
मुरकी बोदला बुन्ना कप्पां येम यरगु ॥ ज्ञानी ॥ ४ ॥
वनमु सींगारामु कोगीलूकु एरका ॥
कंपा गुदूला बुन्ना काकी येम यरगु ॥ ज्ञानी ॥ ५ ॥
दंडु सींगारामु गुररामुकु एरका ॥
गरका पोसा तीने गाडदी येम यरगु ॥ ज्ञानी ॥ ६ ॥
कान्ना दानी सुखमु कन्ना दानिकी एरका ॥
षुटु गोडु रालु आदैम यरगु ॥ ज्ञानी ॥ ७ ॥
घंटालु मोगालु गगेदुकु एरका ॥
आंदूला मादलु मानीक्याकु एरका ॥ ज्ञानी ॥ ८ ॥

मू च ना.

हे पुस्तक मुंबई, डंकनरोडच्या पाठिसागें दुर्गा-
देवीची गळी घर नं० ४९, येथें बाळ॑वा नरसुजी, व
रामवाडीच्या नाक्यावर कासीनाथ वासुदेव खांडेकर
यांचे दुकानी व मुंबाडेवीच्या नाक्यावर हरी लळुमण
यांचे दुकानी विकत मिळेल.

स्था पुस्तकांतील पद्धांची चालीची आडचण
पडल्याम ग्रंथ प्रकाशकास भेटल्यास चाल सांगून
देतील.